# तीसरा – अध्याय

## १९८९ की "सारिका" में प्रकाशित मौलिक कहानियोंमें चित्रित नारी - समस्याके विभिन्न रूपोंका विश्लेषण

किसी भी युगमें नारी चित्रण साहित्य का प्रमुख विषय रहा हैं। उसके रूपोंमें सामाजिक बदलाव के अनुसार लेखकोंकी दृष्टि में भी परिवर्तन आते रहे हैं। अबतक नारी की भावनाओं और समस्याओंका "चित्रण प्राय: लेखकोंने अधिक संख्या में किया है॥ किंतु सन् ६० ई से आगे लेखिकाओंका भी एक समूह आगे बढ़ रहा है जिसमें नारी भावना की अधिक यथार्थ और सशक्त अभिव्यक्ति दिखायी दे रही हैं। लेखिकाओंने नारी चित्रण के विविध आयाम कहानी जगतमें प्रस्तुत किए हैं। नारी समाज का एक अभिन्न अंग है प्राचीन कालसे उसके आजतक विभिन्न रूप सामने आये हैं। उन रूपोंमें आज बहुत भारी बदलाव आ गया है॥ इन बदले और बदलते हुए रूपोंका अनुशीलन इस अध्याय में किया जा रहा हैं।

सन् १९८९ ई की "सारिका" के बारह अकोंमेंसे मुझे १० अंक उपलब्ध हुए हैं। "मार्च" और "मई" के दो अंक उपलब्ध नहीं हुए। उपलब्ध १० अंकोंमेंसे "जनवरी" का अंक "जैनेन्द्र कुमार श्रध्दाजली" अंक है। और "अगस्त" के अंक में नारी पर लिखी गयी एक भी कहानी उपलब्ध नहीं है। "अगस्त" का अंक स्वतंत्र रूपसे विभाजन की कहानियोंपर लिखा गया है। प्राप्त ८ अंकोंमे कुल मिलकर ८३ कहानियाँ हैं और उनमेंसे १७ कहानियाँ स्वतंत्र रूपसे नारी समस्यापर लिखी गयी हैं। और उन्हीं समस्याओंके विभिन्न रूपोंका क्रमसे विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

** १. आवागमन - बलराम -

कहानीका सार - इस कहानीमें बलरामजीने एक ऐसी लड़की की कहानी बतायी है जो अपने विचार, इच्छा के अनुसार जीना चाहती है किंतु समाज और घर के लोग उसे अपने रास्ते के अनुसार जीने नहीं देते॥

मंजरी अपने माँ - बाप के साथ बचपन में ही अपना गाँव छोड़कर दिल्ली गयी। किंतु सत्ताईस बरस के बाद अपने पिता से झगड़कर फिर रामनगर की ओर अपने चाचा के पास आ गयी है। मंजरी के चाचा

रामनगर इलाके के नेता हैं। मंजरी उनकी सहायता लेकर देहात की स्त्रियोंकी समस्याओंको दूर करना चाहती है। और अपने इस मकसद को पूरा करने के लिए जी जान से लड़ती है जिससे रामनगर के इलाके में उसके नाम की धूम मच जाती है। परिणामत: चाचा का महत्व कम हो जाता है। जब चाचा ने एकबार उसे कड़ी आवाजमें कहा कि, "अब एक दिन भी इस गांव में तुम्हें नहीं रहना चाहिए नहीं तो वह उसके हित में नहीं होगा।"[१] मंजरी को मजबूर होकर गांव छोड़ना पड़ा - अपना गांव, अपनी जड़, अपनी जमीन।

मंजरी को राजधानी से गांव में आनेतक इस बात की खबर तक नहीं थी कि कुंवारी लड़की का गाँव को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर काम करना कितना कठिन होता है। गांव के लोगोंके दिल और दिमाग में सदियोंसे घुसे अज्ञान और पाखंड को निकाल पाना किसी एक व्यक्ति के बूते का नहीं हैं। मंजरी को इस बात का एहसास हो गया कि राजधानी की अबोहवाह में पड़े उसके संस्कारोंका मेल वहीं के लोगों से नहीं हो सकता, जननी और जन्मभूमि का महत्व सर्वोपरि हैं, लेकिन जीवनभर व्यक्ति के साथ ही नहीं रहते। इसलिए एकबार अपनी मिट्टी से उखड़ गया इंसान आखिर फिर उस मिट्टी को अपना नहीं सकता।

इसप्रकार मंजरी पढ़ी - लिखी है, फिर भी वह अपनी इच्छासे अपने मकसद को पूरा नही कर पाती। उसे अंतमें हारकर अपने माँ - बाप के पास वापस आना ही पड़ता है। एक पिढ़ी - लिखी नारी होकर भी मंजरी घर और समाज के सामने विवश है। इस कहानी में इसका मार्मिक चित्रण किया गया है कि किसप्रकार पुरुष नारी को अपने लक्ष्य तक जाने से रोकता है। मंजरी अपने चाचा की आज्ञा को टाल नहीं सकती और अपना सपना अधूरा छोड़कर वापस शहर आ जाती हैं।

आलोचना -

इस कहानीमें नारी समस्याओंकी मंजरी के माध्यमसे प्रस्तुत किया है। नारी - स्वतंत्र तो होना चाहती है किंतु उस स्वतंत्रता की पारिवारिक और राजनीतिक सीमाएँ हैं। और इसीलिए नारी विवश होती है। मंजरी का चाचा

ही उसे अपने लक्ष्य की ओर जाने से रोकता है क्योंकि वह देहांत में सिर्फ अपनाही रोब जमाना चाहता है वह किसी मामूली लड़की को अपने रास्ते में रुकावट के रूपमें देखना नहीं चाहता। उसके इस राजनीतिक मकसद के सामने मंजरी कुछ कर नहीं सकती। मतलब नारी की इन्हीं सीमाओं के कारण ही हमेशा पुरुष उसकी विवशता का फायदा उठाता है उसकी इन्ही सीमाओं के कारण ही वह हमेशा अपनी हार को मूक रूपसे सहती रहती है। नारी की इसी व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओंके कारण ही उसकी स्वतंत्रता में कुछ हद तक मर्यादाएँ आती हैं। कुलमिलाकर इस कहानीमें नारी की निम्नलिखित समस्याएँ दृष्टिगोचर होती है -

[१] नारी की स्वतंत्रता की सीमाओंकी समस्या।

[२] स्वतंत्रता की पारिवारिक और राजनीतिक समस्याएँ॥

[३] नारी की विवशता।

********

[२] शिखर और शिखर - हरिदत्त भट्ट शैलेश

कहानीका सार -

"शिखर और शिखर" कहानी में प्रेमा नामक एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने प्रेमी विमलदा के मकसद के लिए अपना पूरा जीवन निछावर कर देती है। हरिदत्त भट्ट शैलेश जीने इस कहानीको बहुत सहज और सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

विमलदा अपने गांव का विकास करना चाहते थे। वे गाँव में प्रचलित रीतिरिवाज, अंध - रूढियाँ और छुआछूत के नियमोंको तोड देना चाहते थे। लेकिन गांव के पुराणपंथी लोग उनके इन विचारोंके विरोध में जाते हैं। विमलदाने एक दिन बादीण [नर्तकी] की बेटी [प्रेमा] से ब्याह का ऐलान जो कर दिया तो सारे इलाके में कुहराम मच गया। एक ब्राह्मण के बेटे का विवाह एक नाचैने वाली लड़की से ! गाँव के लोग इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करते। स्थिति की भयंकरता को देखकर प्रेमा ने विमलदा को खुद ही समझाया कि फिलहाल

वहाँ रहना किसी भी कीमतपर खतरे से खाली नहीं है। प्रेमा ने हाथ जोड़कर विमलदा से कहा - "आपसे विनंती करती हूँ कि आप मेरी रती भर की फिक्र न कीजिए। मैं एक - एक को देख लूँगी। आपने ही तो उस दिन कहा था कि अपने लिए तो सभी जीते हैं, खाते कमाते हैं। असली, जीना तो उसीका है जो किसी बड़े मकसद के लिए अपनी जिंदगी खपा दे। मैं आपको देवी की सौगंध खाकर वचन देती हूँ जबतक जिंदा रहूँगी तबतक कुछ न कुछ ऐसा करती रहूँगी जिससे इन पहाड़ों का कुछ भला हो। बस फिलहाल,आप सिर्फ इतनी-सी बात मान लीजिए कि आप जैसे - तैसे वहाँ से बाहर कहीं भी चले जाइये।"[२]

और तब एक दिन प्रेमा के लाख - लाख समझाने पर और साथियों के बार - बार जोर डालने पर विमलदा गाँव छोड़कर बाहर निकल गये। मगर वह सुलगती चिंगारी धीरे - धीरे जन - जागृति की जलती मशाल बन गयी और प्रेमा तो बस पहाडों में वन - बचाव के लिए तन - मन से समर्पित हो गयी।

आलोचना :-

इस कहानीमें लेखक यह कहना चाहता है कि आज भी समाज में नारी को कितना हीन समझा जाता है। इसी समाज के कारण प्रेमा को अपना पूरा जीवन विमलदा के बिना ही बिताना पड़ा। नारी त्याग की प्रतीक है और इसीलिए प्रेमाअ अपने प्रेमी के मकसद के लिए अकेलेपन को स्वीकार करती है और उसके मकसद को पूरा करने को जी जान से प्रयत्न करती है। वह एक नर्तकी की बेटी है, इसीलिए समाज उसके विवाह को स्वीकार नहीं कर सकता। और प्रेमा को मजबूर होकर समाज के इस प्रस्ताव को स्वीकार करना पड़ता है। कहानी छोटी किंतु बहुत ही मार्मिक हैं।

वास्तविकता तो यह है कि सामाजिक प्रेम की असफलता, नारी की त्यागमयता इनमें फंसी नारी की कहानी को लेखक प्रस्तुत करना चाहता है। किंतु नारी की त्यागमयता के पीछे मूल कारण होता है समाज की अंध रूढियाँ। और इसीलिए वह विवश होती है। प्रेमा की भी यही समस्या है। समाज की रूढ़ियोंको वह बदल नहीं सकती। इसी लिए उसे आदर्श की चादर ओढ़नी पड़ती है। वास्तवमें उन दोनों में हालात का सामना करने की शक्ति नहीं है

इसीलिए वह अपने प्रेम में असफल हो जाते है। अत: प्रेमा हालात से मजबूर है। और उसका प्रेमी स्थिति का सामना करने के बजाय प्रेमा कोअ अकेलेमें छोड़कर चला जाता है। कुलमिलाकर इस कहानीमें नारी की निम्नलिखित समस्याएँ दिखायी देती हैं। -

[१] नारी के प्रेम की असफलता।
[२] विवाह की समस्या॥
[३] नारी का अनिच्छासे त्यागमयी रूप॥
[४] नारी की विवशता।

**********

## ३. सुंदर पड़ोस - प्रेम जनमेजरा

### कहानी का सार -

लेखक के पडोस में एक बाईस साल की सुदंर युवती रहने के लिए आती है जिसका नाम निहालिका है। पहले जो पड़ोसी लेखक और उनकी पत्नी को एकबार भी नहीं पूछते थे वे ही पड़ोसी अब कोई - न - कोई बहाना बनाकर उसके घर आते हैं ताकि वह निहालिका के दर्शन करे। पड़ोसी अब लेखक के सलाहगार और हितचिंतक भी बन गये हैं। वह खुद तो निहालिका को देखने आते हैं और उपरसे लेखक से कहते हैं कि इसतरह से टाटबॉटसे अकेली रहनेवाली लड़की से दूर रहे।

मोहल्लेकी चरित्रवाल पत्नियाँ लेखक के घर आकर अपना दुखड़ा रोती हैं, निहालिका को कोसती हैं। जो पड़ोसी निहालिका से दूर रहने की सलाह देते थे, वही उसके ज्यादा समीप हो गये हैं। कोई उससे गुलाब का फूल पाकर गद्गद है और कोई अंग्रेजी का "फूल" बनकर गदगद है। पत्नियोंके जीवनमें बहार है। और पत्नियोंके जीवन पतझड़ बना हुआ है। कहानीके अंतमें लेखक यह कहता हैं "बाईबाल में कहा गया है कि पड़ोसी से प्यार करो अत: करना ही चाहिये। सुंदर पड़ोस तो बड़े भाग्य से मिलता है। आजकल या तो पाकिस्तान जैसा पड़ोस

मिलता है। मुझे तो अच्छा पड़ोस मिला हुआ है। इसीलिए सोचता हूँ इससे पहले कि चिड़ियाँ खेत चुग जाय मैं भी बाईबल की सीख मान ही लूं।" [3]

आलोचना -

इसतरह एक अकेली लड़की को देखकर समाज के विभिन्न स्तर के लोग उसे कितनी घिनौनी दृष्टिसे देखते हैं इसका बहुत ही हास्यपरक शैली में वर्णन किया है। और उन सभी समस्याओंका सामना करके भी जब स्त्री रहती है तब भी उसपर कितने घिनौने लाछंन लगाकर उसका जीना हराम कर देते हैं और उसे बदनाम किया जाता है। पढ़े - लिखे, शादीशुदा मर्द भी उसकी ओर शराफत से पेश नहीं आते। इतना ही नहीं नारी ही नारी को बदनाम करती है। जब स्त्री कुछ कारणवश अकेली रहने को विवश होती है तो उसे व्यक्तिगत समस्याओंके अलावा सामाजिक समस्याओंका सामना करना पड़ता है। उसे व्यक्तिगत समस्याओंके अलावा सामाजिक समस्याओंका सामना करना पड़ता है। पुरुष तो उसे हीन दृष्टिसे देखता ही है साथ ही साथ नारी ही नारी को शंकालु दृष्टिसे देखकर उसका जीना हराम कर देती है। और इसी नारी समस्याको लेखक "सुंदर पड़ोस" में प्रस्तुत करना चाहता है। इस कहानीमें निम्नलिखित समस्याएँ दिखाई देती हैं। -

१. नारी की अकेलेपन की समस्या।
२. नारी की सौंदर्य समस्या।
३. नारी की ओर देखनेकी समाज की हीन दृष्टि की समस्या ।
४. नारी की विवाह के पूर्व की समस्या।

***********

४. जुनून - सत्येनकुमार -

सत्येन् कुमार की यह कहानी नारी की परवशता, व्यथा एवं पुरुषवर्ग की कठोरता को स्पष्ट करती है। प्रिया अपने पति से बिछुड़कर किसप्रकार अनेक पुरुषोंके हाथ का खिलौना बनती है इसे बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रित

किया है। एक नारी के भटकने से जिंदगीमें किसतरह वह ठोकरें खाती फिरती है इसका करुणापूर्ण चित्रण मिलता है। नारी का अहं नारी को अपनी ही दुर्दशा करनेमें कारण बनता है और इसीका चित्रण "जुगनू" से मिलता है।

कहानी का सार -

प्रिया और दिनेश का प्रेमविवाह हो चुका है। लेकिन विवाह के बाद दिनेश बेला नामक औरत के पीछे पड़ा हुआ है। प्रिया जब इस बात का विरोध करती है तब उसी रात उसे घर से बाहर निकाल दिया जाता है। प्रिया अपना अपना घर छोडकर देवेन् नामक पुरुष का साथ लेती है। देवेन रईस बापका थोडा बिगड़ा हुआ लड़का है। उसका एक्सपोर्ट का बिझनेस है। प्रिया ने भी इंटरनैशनल ट्रैवल एजन्सी में खासी अच्छी नौकरी हासिल की है और वह अपने आपको ज्यादा सुव्यवस्थित और आत्मविश्वाससे भरी हुई महसूस करती है। दिनेश से अलग होने के बाद प्रिया कई आदमियों के साथ सोयी थी। वह जरूरी भी था और फायदेमंद भी शाबित हुआ था। बहुत वक्त लगा था प्रिया को अपनी "औरत की देह को समेटने में जिसे दिनेश ने चीनी मिट्टी के किसी गुलदान की तरह तोड़ डाला था। लेकिन देवेन् ने उस रात चीनी मिट्टी के उस टूटे हुए गुलदान को, किसी जादूगर की तरह सालिम कर दिया था।" [४]

इसतरह देवेन और प्रिया में अच्छी दोस्ती बन गई थी। वह देवेन पर विश्वास करती थी और उस विश्वास को अब चार साल हो रहे थे। उसकी जिंदगी से जुड़ी और उलझी हुई कई बातें प्रिया को इस दौरान पता चली थी। ऐसे मौकोंपर अक्सर देवेन ने उससे एक ही बात कही थी, "तुम इसमें मत उलझो- - - - - - - - - प्रिया लेट मी बी अलोन - - - प्लीज।" [५]

यह एक ऐसा मंत्र - सा था जिसे कहते वक्त देवेन की आँखे किसी बंद गली की तरह हो जाती थी। शुरू - शुरू में उसे यह कुछ अजीब सा लगता था। बल्कि बहुत बुरा लगता था। उसने एक बार देवेन से कहा " "लेकिन यह कैसी दोस्ती हुई देवेन ? मेरी हर मुसीबत में तुम सबकुछ करते हो मेरे लिए और तुम्हारी सब परेशानियाँ - - - - सिर्फ तुम्हारी हो - - - आई फिल राहर इनफीरियर - - - - एंड वर्थलेस - - - - - -" [६]

प्रिया के इस कथनपर देवेन ने कहा था, "मैं अभीतक अपने ही अँधेरों से बाहर नहीं आ पाया हूं - और मेरा अँधेरा सिर्फ मेरा है। तुम्हारी दोस्ती उसमें रोशनी तो साबित हो सकती है लेकिन उस रोशनी के सहारे मैं वहाँ से निकल नहीं सकता।[७]

अपने आपसे उस घटना का बदला उस शाम प्रिया ने एक दूसरे मर्द के बिस्तर में लिया।था। वह आदमी भी बहुत अमीर था। दूसरे दिन देवेन उसे अपने ढंग से मनाने आया। देवेन ने प्रिया से कहा, "तुम समझती क्या हो अपने आपको ? मुझे भी ? अगर किसी एक आदमी या कि पचासआ आदमी भी सही - - - - उनके हाथों तुमने तकलीफ उठायी है याकि अपनी जिंदगी को बर्बाद भी किया है तो ये हक तुम्हें कैसे मिल गया कि तुम हर आदमी से उस बात का बदला लो और अगर तुम इतनी ही बहादूर हो तो फिर दिनेश से लोन बदला - - - जिसने तुम्हें ये सारी तकलीफें दी हैं, तुम क्या किसी भी दूसरे आदमी या उससे मिले सुख से सबस्टीटयूट कर सकती हो ? या फिर क्या तुम यह समझ रही हो कि जो सजा तुमने दिनेश के लिए मन - ही - मन सोची थी, उसे तुम दुनिया के सारे मर्दों को दे पाओगी ? दिनेश को तुमने सजा दे दी। और तुम समझती हो कि सजा काहने भर से कोई आदमी सुधर जाता है ? - - - - अगर बंधे बंधाये रिश्तो से ही दुनिया का काम चल सकता तो दोस्तों के बजाय लोग सुअर या मुर्गे पालते। लोकिन वक्त पडने पर दोस्त काम जरूर आते हैं - - - - उन्हें जिबह नहीं किया जाता। कोई शर्त नहीं हो सकती प्रिया - - - हम लोगोंके बीच - - - अगर कि हम दोस्त है। लेकिन आधी जिंदगी जीने के बाद भी तुम अपने आपको इस रिश्ते में औरत की तरह मानना या मनवाना चाह रही हो तो - - - -

और वह चुप हो गया था।" [८]

पता नहीं कितनी देर तक प्रिया रोती रही। वह जानती थी कि अनजाने में उसने देवेन को गहरी चोट पहुंचायी है। उसने देवेन की बातों पर बहुत सोचा

और लगा कि शायद सचमुच कही - न - कहीं वह देवेन से भी एक तरह से वही अपेक्षाएँ और उनकी प्रतिक्रिया स्वरूप वही व्यवहार कर रही है जिनके रहते उस रात वह दिनेश के पास से चली आयी थी। देवेन से मिलने के बाद उसे पहली बार पता चला था कि तन से कही पहले उसका मन ढल चुका था। कहीं ज्यादा घने अंधेरे की कैद में थे उसके मन के किनारे ---- जिनके बीच स्याह धार कुछ बहता रहता था जिंदगी के नामपर - - - -- फिर देवेन आया था उस काले अंधे अंधेरे में किसी जुगनू की तरह ---- और वह जो अपने अंधेरो से लगभग अंधी - सी हो चुकी थी, उस जुगनू को ही रोशनी समझ बैठी थी - - ---- ।[१]

देवेन् गहरी नींद में सोया था उसका चेहरा अजीब ढंग से चमकता हुआ सा लगा। जुगनू की तरह ------ वह उसी तरह उस चेहरे को गौर से देखने के लिए अपनी नजरों को बांधने की कोशिश करने लगी दरअसल ---- उसे अब पहली बार समझ में आया था कि दोस्ती की सबसे सही और सच्ची मिसाल सिर्फ जुगनू ही होता है। इतने बड़े न जाने कहाँ कहाँतक फैले हुए अंधेरे के बदन और उसके मन को वह छोटासा जलता - बुझता सा जुगनू ही कभी कभी कुछ कहने समझाने आ जाता है। वह आहिस्ता से उसके सिरहाने बैठ गयी और उसके जागने का इंतजार करने लगी।

## आलोचना -

इसप्रकार प्रिया अंतमें अपने आपको समझाती है। वह देवेन को जुगनू का प्रतीक मानती हैं। देवेन की कही हुई बातों पर वह खूब सोचती है और तब उसे पता चलता है कि वह हर मर्द के साथ बदला नहीं ले सकती। दिनेश की दी हुई सजा का हर मर्द से बदला लेना जिंदगी से बुरी तरह से खेलना है। वह जिस कारण से अपने पति का घर छोड़ती है उसी कारण से हर मर्द का सहारा लेना चाहती है।

वास्तविकता तो यह है कि परित्यकता नारी की ओर समाज हीन दृष्टिसे देखता है। पति के घर के परित्याग के पीछे समाज की पुरातन

दृष्टि ही-काम करती है। जब नारी पति के प्रेम में बँटवारा नहीं चाहती। वह सिर्फ अपने को ही चाहे ऐसी उसकी भावना होती है। जब इस भावना को ठेस पहुँचती है तो स्थिति के अनुसार वह रौद्र रूप धारण करती है। परिणामत: वह हर पुरुष से बदला लेना चाहती है। उस बदले की आग में चाहे उसकी जिंदगी ही भटक जाये उसे इस बात की परवाह नहीं होती। अत: पुरुष ही इतनी भयानक समस्या में नारी को धकेलन में मूल कारण होता है। जब वह उस समस्या में भटकती है तो अन्य पुरुष भी उसे जिंदगी से ही उठाने की सोचते है।

वास्तविकता तो यह है कि प्रिया एक पढ़ी - लिखी नारी है इसीलिए वह स्थिति को मूक रूपसे सहने के अलावा उस स्थिति से - मतलब पति या हर पुरुष से बदला लेना चाहती है। वह आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र है। अत: वह हालात से समझौता नहीं करना चाहती।

संक्षेप में इस कहानी में निम्नलिखित समस्यायें चित्रित की गई हैं -

१. परित्यक्ता नारी की समस्या।
२. पुरुष वर्ग की नारी की ओर देखनेकी दृष्टि परिणामत: नारी की जिंदगी में भटकने की समस्या।
३. नारी के अहं का दुष्परिणाम।
४. पुरुष वर्ग की कठोरता।

**********

५. <u>अब चिठ्ठी नहीं आयेगी</u> -

कर्तार सिंह दुग्गल

"अब चिठ्ठी नहीं आयेगी" कहानीमें दहेजप्रथा के परिणाम को चित्रित किया है। लेखकने दहेजप्रथा पर एक दूसरी कहानी लिखी है और उस कहानी को पढ़कर एक स्त्री अपनी प्रतिक्रिया लेखक को चिठ्ठी से भेजती है।

वह लेखक की कहानी में घटित घटनाओं का और अपने जीवन में घटित घटनाओंका साम्य लिखती रहती है, और अंतमें अपनी कृतिसे ही लेखक की कहानी को पूरा किया है। लेकिन उस स्त्री ने अपना पता लेखकको नहीं भेजा। उसने पाँच चिठ्ठीयाँ लिखी हं।

कहानी का सार -

पहली चिठ्ठी में - वह लेखक को लिखती है कि - "आपकी कहानी की तरह मेरी भी एक सास है। मेरा भी एक पति है, आपके कहानी के पति की तरह - - - - - हाय क्या मुझे भी मरना होगा ?"[१०]

दूसरी चिठ्ठी में - वह कहती है - "मैं जान - बूझकर आपको पता नहीं लिख रही हूं। इधर कहीं मेरे नामपत्र आ गया तो जो कुछ कल होने जा रहा है आज हो जायेगा अभी हो जायेगा। आपकी कहानी की एक - एक घटना मेरे जीवन से मेल खाती है। हाय क्या मुझे भी मरना होगा ? मिट्टी के तेल में निचुड रही मैं अपने आपको तीली लगा लूंगी। और फिर एक खापच्ची की तरह जलकर राख हो जाऊँगी।" ११

तिसरी चिठ्ठी : मे वह लिखती है - "आजकल मैं मायके आयी हूँ। मैं मरना नहीं चाहती। मैं अपने मन्नू [बच्चा] के लिए जिंदा रहना चाहती हूँ। यह तिसरी बार मैं मायके आयी हूँ। तीसरी बार मुझे उनके सामने हाथ फैलाना होगा। पिछली बार १० हजार का चेक लेकर गयी थी।" १२

चौथी चिठ्ठी - "आजकल फिर मै मायके आयी हूँ। मेरी भाभी अपने मायके से रुपयों की झोली भरकर लायेगी। उस बेचारी ने तो एक के बाद एक दो बेटियाँ जन्मी है। उसकी क्या मजाल जो सामने से बोल सके। वह जो कुछ मायके से लायेगी वो मुझे अपने माँ - बाप देगें।" १३

पाँचवी चिठ्ठी - आप माने चाहे न माने, हू - ब - हू आज सुबह वैसा ही हुआ जैसा मैंने आपकी चिठ्ठी में इशारा किया था। पिछली शाम मेरी भाभी अपने मायके से लौटी। वह रातभर अपने कमरेमें सिसकती रही।

सुदाह मैं ने भाभी ने लायी हुयी थैली मेरे सामने ला रखी। एक ओर उसकी बहू मायके से पैसा बटोरकर लाती है, दूसरी ओर वह बेटी की सास की हिरस के कुँए को भरने के लिए आगे चला देती हैं। मैं पूछती हूँ, यह चक्कर कबतक चलता रहेगा ? कब तक और ? और मैंने फैसला किया है कि बुराई के इस कुचक्र को मैं बंद करुंगी। आज ही बंद करुंगी। यह चिठ्ठी लिखकर मैं नौकर के हाथ बाहर सड़क पर लेटर बक्स में डालने के लिए उसे भेजूंगी। इस समय जब घर के सारे लोग बाहर गए हुए है - कोई नहीं॥ ------ मैं रसोई में मिट्टी के तेल की बोतल से नहा लूंगी। और फिर अपने हाथों से तीली लगाऊंगी। अपनी मैं के आंगन में, सास के आंगन में नहीं । क्योंकि हर सास पहले मैं होती है। यह सबके पहले मेरी मैं को सीखना होगा हैं मेरी मैं को। क्यों, मैंने आपकी कहानी को एक कदम आगे नहीं बढ़ाया ? अच्छा विदा।"[१४]

उसकी इस अंतिम चिट्टी के बाद लेखक हर रोज उसकी अगली चिठ्ठी को इंतजार करता रहा। उसे लगता है शायद उस स्त्री को किसीने घर जल्दी लौटकर बचा लियाह हो। लेकिन लेखक की यह झूठी आशा असफल हो गयी। कई दिन बीत गये ■ लेकिन उसकी चिठ्ठी नहीं आयी और लेखक को पूरा विश्वास हो गया कि अब उसकी चिठ्ठी कभी नहीं आयेगी।

आलोचना -

लेखक ने इस कहानी में यह संकेत किया है कि दहेजप्रथा के कारण नारी को अपने जीवन को ही नष्ट करना पड़ता है। नायिका की चिठ्ठीयोंके द्वारा ही पूरी कहानी को लिखा गया है। इस कहानी में परंपरागत नारी - बंधन और नारी - पीड़ा को चित्रित किया है। किंतु दहेज प्रथा के नए पहलू को दिखाया है, इस कहानी की नायिका हर स्त्री की तरह ससुराल में अपने आपको जला नहीं देती बल्कि वह मायके में या अपनी मैं के घर खुद को जला लेती है। लेखक उसके इस नए कदम से यह संकेत करना चाहता है कि हर सास पहले मैं होती है और पहले मैं को यह सबक सीखना होगा। उसकी इस नई कृतिसे लेखक ने नई संवेदना जगाई है। लेखक यह कहना चाहता है कि पहले मैं को इस प्रथा को नष्ट करना चाहिए तभी वह आदर्श सास बन सकती है और

निष्पाप बहुओंकी हत्या बच सकती है। लेखक परंपरागत नारी - पीड़ा को आधुनिक रुपमें चित्रित करना चाहता है। वह परंपरागत स्थिति को बदलना चाहता है। इसमें उन्होने दहेज प्रथा के कारणोंको भी प्रस्तुत किया है। जैसे नायिका की भाभी के दो बेटियाँ ही हैं इसीलिए उससे बार-बार पैसों की मांग की जाती है। नारी ही नारी के शोषण का मूल कारण है, इस ओर भी लेखक ध्यान केन्द्रित करना चाहता है। दहेज के इस भयानक कुप्रथा को नष्ट करने का हल लेखक नायिका के माध्यमसे यह बताता है कि अपने घर से ही इस भयंकर प्रथा को नष्ट करना चाहिए । अतः इस कहानी में दहेज प्रथा के नए पहलू को चित्रित किया गया है और उससे नई संवेदना जगाई गई है । इस कहानी में निम्न लिखित नारी समस्याओंको चित्रित किया गया है -

[१] दहेज प्रथा की समस्या ।

[२] दहेज प्रथा के कारण नारी की विवशता की समस्या ।

[३] नारी की आर्थिक परवशता की समस्या।

**********

*** वह लड़की - रमाकांत ***

कहानी का सार -

इस कहानीकी नायिका नौकरी की तलाश में एक ऑफिस में जाती है । उस ऑफिस का बॉस उसे बार - बार आने को कहता है। जब वह पहली बार जाती है तो वह कहता है - "तुम पता छोड़ जाओ खबर कर दूँगा। तुम्हारे शहर से दिल्ली बहुत दूर तो नहीं । क्या किराया लगता है यहाँ तक का ? यही कोई दसपंद्रह रुपये है न। कोई ज्यादा नहीं । काम चाहनेवालोंको कुछ कुर्बानियां तो करनी ही पड़ती हैं कि नहीं ? फिर तुम्हे दस - बीस बार तो आना नहीं हैं । बस यही एकाध बार। मेरा ख्याल है अगली बार तुम यहाँ आओगी तो कोई - न कोइ इंतजाम हो चुका होगा।" [१५]

उसके बाद फिरसे दोन – तीन बार नायिका बॉस से मिलने गयी। जब वह चौथी बार गयी तो बॉस ने कहा – "तुम्हें रखने का आर्डर वगैरह सब तैयार हो गया है। बस उस पर हमारे मालिक का दस्तखत होना बाकी रह गया है वह भी हो जाता मगर – – – – उनका शीशेका मछलीघर रात को किसी बिल्ली ने तोड़ दिया उसमें तरह तरह की मछलियाँ थीं। वे सभी मर गयीं। हमारे मालिक रात को देर तक उन्हें देखा करते थे। इसमें उन्हें जमाने और इसान को समझने में बहुत मदद मिलती थी। वे यह देखकर बहुत खुश होते कि बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। बड़ी का काम छोटी मछली को निगलना और छोटी का काम बस निगला जाना है, और दोनो अपनी इस किस्मत से खुश है। वे इंसानों में भी ऐसा ही राम राज चाहते हैं। – – – – – दो महीने तो शीशाघर बनने में ही लग जायेंगे, फिर एकाध हफ्ता उनका मूड ठीक होने में लगेगा। तुम इसके बाद ही आना।" [१६]

जब नायिका पाँचवीं बार गयी तो वह बेहद उदास और थकी हुई थी। उसे जीवन का कोई अनुभव नहीं था इसलिए ढाई महीने बाद वह फिर से आ गयी थी। उसने बॉस से पूछा – "दस्तखत तो हो गये होंगे जी! हो गये हैं न!" "दरअसल – – –" बॉस ने इतना ही कुछ कहना चाहा, पर इसके पहले ही लड़की बोल पडी, "दरअसल मछलीघर नहीं बना है न जी!"[१७] "नहीं, नहीं! बना तो था – – – – – " पर लड़की फिर बीच में ही बोल पड़ी, "हां बना तो था। पर वह फिर टूट गया। है न जीं।"

"हां यही हुआ, पर तुम्हें कैसे पता ?"
"पता है जी। क्योंकि उसे मैंने ही तोड़ा था।"
"तुमने ?"
"हां जी मैंने। दरअसल में ऐसी मछली नहीं हूं जिसे निगला जा सके।" [१८]

नायिका के इस अंतिम वाक्य से ही कहानी समाप्त हो जाती है। इसका अर्थ ही यह है कि वह अपने आपको छोटी मछली नहीं बनना चाहती। वह बॉस की वासनाका शिकार नहीं बनना चाहती।

आलोचना -

रमाकांतजीने इस कहानीमें नारी की नौकरी की समस्या को चित्रित किया है। नौकरी के नाम पर नारी को किसप्रकार वासना की दृष्टिसे देखा जाता है। आपने जाल में उसे पुरूष कैसे खींच लेना चाहता है इसका इस कहानीमें मार्मिक चित्रण किया है। आर्थिक दुर्बलता के कारण नारी को कैसे बार - बार विवश होना पड़ता होना पड़ता है यह लेखक दिखाना चाहता है। बॉस और मालिक उस इसी दुर्बलता के कारण छोटी मछली का प्रतीक समझते हैं। आजकल की नौकरी में स्थित वातावरण का सच्चा चित्राण लेखक में किया है। बेरोजगारी की समस्या को भी लेखक दिखाना चाहता है।

इस कहानी में निम्नलिखित समस्यायें दिखायी देती हैं -

१. नारी की आर्थिक दुर्बलता की समस्या।
२. पुरूष वर्ग की वासनामयता।
३. नारी की नौकरी की समस्या।
४. नारी की विवशता।

************

## [७] ट्रेक्टर का पहाड़ - जगवीर सिंह वर्मा

कहानी का सार -

कल्याणी के पिता [दाउजी] के दो संतानें हैं। एक लडकी कल्याणी और एक बेटा कालीचरन। कालीचरन का विवाह हो गया उसे दो बेटे भी हुए थे। किंतु अचानक कालीचरन की मृत्यु हो गई। कालीचरन के दो बेटे बड़े होकर समय और स्थिति की नाजुकता को भाँपकर घर से खिसक गये। इस तरह दाउजी और रामवती का सहारा टूट गया। दाउजी ने कल्याणी का विवाह कर दिया। दाउजीने अपनी बेटी की खुशहाली के लिए अपनी जमीन रेहन रखकर कर्ज से ट्रेक्टर खरीद कर दिया था। किंतु दामाद ने समय पर कर्ज नहीं चुकाया और नीलामी नोटीस आ गयी। इस प्रसंग से दाउजी और रामवती रामवती का कल्याणी के प्रति व्यवहार बदल गया।

एक बार दाउजी बीमार पड़ गये उन्हें टी. बी. की. लंबी बीमारी हो गयी। लेकिन कल्याणी अपने पितासे मिलने मायके नहीं जा सकती। वह रात दिन तड़पती है। किंतु कुछ कर नहीं पाती। ट्रेक्टर की आमदनी को खा गये जेठ, देवर, चचिया, ससुर और उसका कर्ज चार गया दाउजी की छाती पर और बेटी का छूट गया पीहर। ससुराल में पति के बेकार होने के कारण वह दयनीय है और मायके में ट्रेक्टर का कर्ज का बोझ पिता के घर को तोड़ गया है। अंतमें लेखकने कल्याणी की व्यथा को पिता को लिखे गये खत में वर्णित किया है - "दाउजी आपकी गंभीर बीमारी की खबर मिली, मगर मैं कुछ कर नहीं सकती। जानती हूँ कितनी किफायत से आपने वे चार इंटें खड़ी की हैं। मुझे पढ़ाया, लिखाया, ब्याहा, काजा ज्वान बेटा दो संताने आपके जिम्मे पालने को छोड़कर देखते - देखते चल बसा। बुढ़ापे का सहारा जानकर, और अपनी खेती से भी ज्यादा लाभ जमाने की गरज से आपने इन्हें ट्रेक्टर खरीदकर दिया मगर - - - मुझे आपके चेहरे की तरफ देखा नहीं जाता। कितना जानलेवा है इस सब बारेमें सोचना।"[१९]

कल्याणी आगे अपने पिता को भी दोषी ठहराकर प्रश्न पूछती है - "आखिर इसमें मेरा क्या दोष है। विवाह के पूर्व आप मुझे दूसरा बेटा मानते थे। अगर वह सचमुच बेटा होती तो क्या वह उस जमीन में अपना हिस्सा न बंटाता ? हाँ, वह आपकी सेवा करता, आपके बुढ़ापे की लाठी बनता यही न ? पर दाउजी आप गांव में रोज ही देखते हैं, कितने बेटे सेवा करते हैं अपने बाप की ? दाउजी सच ही मैं आपकी सेवा करना चाहती हूँ, आपके पास रहना चाहती हूँ - - - - - सिर्फ पर भाभी मानेगी क्या ? और पीटर के घर का मालिक पिता के बाद बेटा और बाद बहू होती है, बेटी नहीं। कब निपटेगा यह ट्रेक्टर के कर्ज का पुराना। कब भाभी मुझे दूसरे बेटे के रूप में स्वीकार कर सकेगी ? और कब मैं आपको देखूँगी ? आखिर कब ? - - - - " २०

आलोचना -

इस प्रकार एक नारी के मानसिक अंतर्द्वंद्व का अंत्यत करुणापूर्ण चित्रण जगवीर सिंह वर्माजीने किया है। पिता - बेटी की जुदाई को बेटी ने अपने व्यथित शब्दोंमें अत्यंत सहजतासेहि चित्रित किया है। इस कहानीमें इसका चित्रण मिलता है कि एक ट्रेक्टर के कारण मनुष्य के आपसी जीवित संबंधो में किसप्रकार दरार पड़ती है। नारी की विवशता को चित्रित किया है। कल्याणी ससुराल में भी दयनीय है क्योंकि पति कुछ कमाता नहीं और इधर मायके भी वह नहीं जा सकती। वह पिता को देखना चाहती है किंतु देख नहीं पाती। वह रात - दिन इस समस्या का हल ढूँढ़ने के लिए तड़पती है किंतु उसकी समस्या का समाधान नहीं हो पाता। वह अंतमें पाठकों से ही अपनी समस्या का हल पूछती है। वह कितनी मजबूरी और दयनीय अवस्था में जीती रही है इसका यथार्थ चित्राण उसके ही संवादोंसे मिलता है। इस प्रकार लेखक ने पारिवारिक जीवन की छोटी - सी घटना अत्यंत मार्मिकतासे चित्रित की है। आर्थिक विपन्नता तथा विषमता ने कल्याणी के मन में असुरक्षा का भाव उत्पन्न किया है। इसलिए पारिवारिक संबंध को लेकर वह आहत है।।

वास्तविकता तो यह है कि लेखक इस कहानी में हालात से मजबूर नारी की व्यथा को चित्रित करना चाहता है। आर्थिक परवशता नारी की समस्या का मूल कारण है। परंपरा के अनुसार नारी का विवाह के बाद मायके में कुछ स्थान नहीं होता। ससुराल में उसका एक ही सहारा होता है, पति। अगर वही नारी अ [पत्नी] का साथ नहीं देता तो उसकी अवस्था पतझड़ की तरह होती है। इस कहानी में लेखक ने इसी ओर संकेत किया है। किंतु लेखकने नारी के नए विचारों को भी उजागर किया है। लेखक ने यह भी पूछा है कि कितने बेटे सेवा करते है अपने बापकी। अर्थात् समाज या माँ बाप बेटा और बेटी में जो परंपरा से करते आ रहे है उसीकी ओर लेखक संकेत करना चाहता है। इसमें नारी अपनी समस्या का कारण पुरुष को ही मानती है, अर्थात कल्याणी अपने पिता को ही दोषी ठहराती है।

इस प्रकार "ट्रेक्टर का पहाड़" में नारी की निम्नलिखित समस्याओंका चित्रण किया गया है -

[१] नारी की आर्थिक परवशता की समस्या।

[२] नारी का अंतर्द्वंद।

[३] नारी की विवशता।

*******

## [८] प्राचीन और तीन चेहरे

निर्मला अग्रवाल

कहानी का सार -

इस कहानीमें निर्मला अग्रेवालजीने अपनी तीन सहेलियोंकी कहानी बताया है जिसमें नारियोंकी मजबूरियोंकी कहानी चित्रित की गयी है। वास्तविक यह कहानी रेखाचित्रात्मक है।

पहली कहानी दुल्लो नामक स्त्री की है। लेखिका जब छुट्टियोंमे दादी के घर जाती थी वहींपर उसकी दुल्लो से मुलाकात हो गयी। वह दादी के घर चौका बर्तन और हर प्रकार काम करती थी। दुल्लो मुहल्ले की गरीब घरकी लड़की थी। माँ - बाप बचपन में चल बसे थे। पाँच भाई और अकेली बहन। घर के लिए वह बोझ बन गई थी। बचपनसेही अक्ल की तेज होने के कारण उसे पढ़ने का बहुत शौक था। आते जाते स्कूल के सामने खड़े होकर कुछ पंक्तियाँ कंठस्थ करती थी। किंतु उसकी यह इच्छा पूरी न हो सकी, पढ़ने की लगन तड़प होकर भी। उसने एक कठोर प्राचीर के पार झाँकने का प्रयत्न किया था, किंतु वह नींव का पत्थर बनकर रह गयी, प्यासी ही प्यासी राह ही न बना पायी अपनी इच्छानुसार।

## दूसरी कहानी

दूसरी कहानी है लेखिका की सावाले सालोने चेहरेवाली आठवीं कक्षा की सहपाठिन राधा मुकुल। राधा तो जन्मजात अभिनेत्री है। वह स्कूल में नाटकों में इतना जीवंत अभिनय करती कि बाकी अभिनेत्रियों के लिए करने को कुछ बचा ही नहीं पाती। किंतु अचानक राधा विदा ले गयी क्योंकि बचपनमें ही उसकी शादी तय की गयी। आगे चलकर जब वह ससुराल गयी तो रात को चुपके से उठकर शीशे के सामने हाथ - पैर हिलाहिला कर जोर से बोलती हुई सबकी नींद खराब करती थी। उसकी इस हरकत से सास - ससुरने राधा के माँ - बाप पर यह आरोप लगाया कि धोका देकर उन्होंने पागल लड़की को गले बाँध दिया है। ऐसा आरोप लगाकर उसे वे लोग मायके छोड़ गये। माँ - बाप के लिए राधा बोझ बन गयी। उसके बाद उसने माँ को वचन दिया कि वह ऐसी हरकत कभी नहीं करेगी और राधा ससुराल चली गयी।

वर्ष पर वर्ष बीतते गये। लेखिका की भी शादी हो गयी। एक बार लेखिका अपनी बिटिया की शादी की तैयारी में शॉपिंग गयी वही उसकी मुलाकात राधा से हो गयी। दोनों सहेलियाँ एक - दूसरेसे लिपट गयी। राधा के सब बाल सफेद हो गये थे। राधा के हाथ में एक बच्चा था। लेखिका ने शिशु की ओर संकेत करके पूछा - "हाय क्या हो गया राधा तुझे ? तेरा मुन्ना है ?"

राधा बोली - नहीं - "मेरी बिटिया की दूसरी संतान है।"

लेखिका - "तू नानी भी बन गयी ?"

राधा बोली - "और दादी भी।" उसका स्वर सपाट, सूखा और भावहीन था। उसने आगे कहा - " हाँ निम्मो, स्कूल में भी मैं तुम सबको नाटक में पछाड़ देती थी। देखो अब जीवन के नाटक में भी पछाड़ दे ही गयी।"२१
राधा के जाने के बाद लेखिका को राधा के विवाह के दिन उसके मुरझाये चेहरे पर देखी हुई भावनाएँ याद आ गयीं। और लेखिका को कुछ पंक्तियाँ याद आ गयीं -

A
11828

"न रो राजा - - - - - - न कर और मौन रुदन
अब तो भूल जा उस जीवन को
जिसे तू कोसों पीछे छोड़ आयी है।
कोई साथ न देगा तेरा,
तू एकाकी है, राधा निपट एकाकी।" [२२]

<u>तीसरी कहानी -</u>

तीसरी कहानी है घोर कृष्ण वर्ण की लेखिका की बी. ए. की सह छात्रा अलका माथुर की संगीत की अनन्य उपासिका। गले से मानो पिघला सोना बहता। अलका अपनी संगीत - शिक्षा को और आगे बढ़ाना चाहती थी किंतु इसी बीच उसकी शादी तय हो गयी और संगीत का शौक अधूरा ही रह गया। ससुरालवालोंने उसके इस शौक पर पाबंदी लगायी। ऐसे ही वर्ष पर वर्ष बीत गये। अलका तीन बच्चों की मा बन गीयी। वह मायके से जिद करके एकबार तानपुरा और तबदले की जोडी उठा लायी किंतु सास - ससुर के सिरपर पट्टी देखकर उसने रात का रियाज भी बंद कर दिया। जहाँ एक ओर अपनी आत्म - शक्ति से अपना ध्यान संगीत की और से हटाया है दूसरी ओर उसका स्वभाव उफनता ज्वालामुखी बन गया है। पहले जिस प्रकार सास उसपर रोब जमाती थी अब वह सासपर रोब जमाती है। सास दबती फिरती है। बच्चे भी मा से डरते हैं। वर्ष पर वर्ष बीत गये। कोकिल कंठी अलका चूल्हे की आग में तप - तप कर ऐसा लोहखंड बनती जा रही है जिसमें न अनुभूति है, न कोमलता न सरसता ही रह गयी है। अलका अब लापरवाह, उदास मौन जैसे जीवन जी नहीं, घसीट रही है। अब तो स्थिति यह है कि न तो अब उसे परिवार की परवाह है और न परिवार को उसकी।

निर्मला अग्रवालजीने इस रेखाचित्रात्मक कहानीमें अंतमें कहा है - "वर्ष पर वर्ष बीतते - बीतते आज मेरी आयु की अधेड़ावस्था की देहरी को छूने का प्रयत्न करने लगी है। मेरे बीते जीवन ने भी जीने कितने उतार चढ़ाव देखे जो कुछ दिन अपना प्रभाव छोड़कर विस्मृति की गोद से समा गये। हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ गये। ये तीन सिसकते चेहरे [दुल्लो, राधा, अल्का, ]

जिनपर ढलकी आँसू की बूँदें आज भी हर सुबह ओस कणोंसी मेरे मानस - पटल पर कौंधती उस बीती रात की याद दिलाती है जो निद्राहीन कालिमा से ढकीं, धुंधली सी चांद की ज्योति में बस रोती ही रही थी - - - - - - - - अनवरत।" २३

आलोचना -

इस प्रकार निर्मला अग्रेवालजीने अपनी बचपन की तीन सहेलियों की कहानीपर"प्राचीर और तीन चेहरें" में चित्रित की है। पहली कहानी की नायिका दुल्लो पढ़ने की इच्छा होककर भी पढ़ नहीं सकती। आर्थिक परवशता नारी को दासता का मूल कारण है। और इस आर्थिक कमजोरी का दुल्लो शिकार बन गई है। दूसरी कहानी की नायिका राधा जन्मजात अभिनेत्री है किंतु बाल - विवाह का शिकार बन गई और उसके जीवन का ही नाटक बन गया है। उसमें जिंदगीमें कुछ बनने की क्षमता होकर वह कुछ बन नहीं पाती। वह अपने ही जीवन के करुणपूर्ण नाटक की वह स्वयं ही नायिका है। माता-पिता को तकलीफ न हो इसी वजह से वह वास्तविक नाटक खेलती रहती है॥ तीसरी कहानी की नायिका अल्का माथुर भी अपनी संगीत साधना को आगे बढ़ा नहीं पाती। वह शिक्षित है, विवाह के विरोध में आवाज उठाने की उसमें क्षमता है, किंतु भारतीय नारी की परंपरा और संस्कारों के कारण विवाह के लिए तैयार होती है॥ आपनी इस अपूर्ण इच्छा का वह, घर के सभी लोगोंसे बदला लेना चाहती है। अर्थात् वह नारीका विद्रोही रुप धारण करती है। किंतु वह जीवन को जी नहीं बल्कि घसीट रही है। वह दिन रात घुटती, निराश, व्यथित होकर काम में लगी रहती है। परिवार के प्रति भी वह लापरवाह बन गई है। और इसका भयानक नतीजा निकलता है कि न उसे परिवार को परवाह है और न परिवार को उसकी ॥

इस कहानीमें लेखिका ने स्थिति या हालात से मजबूर नारियोंकी कथा बतायी है। तीन कहानियाँ पर तीन में एक ही एक सूत्र है - नारी की परवशता, रुढ़ि की मार और व्यक्तित्व का हनन। आज भी इस माहौल से नारी को छुटकारा नहीं। भारतीय परंपरा के कारण भारतीय नारी को इस

माहौल से छुटकारा नहीं । उसके मनपर इस परंपरा का एक प्रभाव है, और इस प्रभाव को वह चाहकर भी तोड़ नहीं सकती। और इसीलिए भारतीय नारी दुर्बल और विवश कहलायी जाती है। वह स्थिति का सामना करने के अलावा स्थिति में जकड़ जाती है, यही इस कहानीमें लेखिका चित्रित करना चाहती है। इस कहानीमें नारी की निम्नलिखित समस्यायें दिखायी देती हैं -

[१] नारी की आर्थिक समस्या।
[२] अनपढ़ नारी की समस्या।
[३] बाल - विवाह की समस्या।
[४] नारी की परवशता।
[५] रूढ़ि की मार और व्यक्तित्व का हनन।

***************************************

## ९. चकरघिन्नी - मृदुला गर्ग

कहानी का सार -

विनीता के माँ - बाप डाक्टर थे । इसलिए बचपनसे ही विनीता को उनका पूरा प्यार नहीं मिला। इसलिए बड़ी हो जाने के बाद उसने फैसला किया कि वह डाक्टर भी नहीं बनेगी और कोई नौकरी भी नहीं करेगी। वह एक आदर्श पत्नी और माँ बनना चाहती थी। उसकी इस जिद के सामने माँ बाप की एक नहीं चली। विनीता ने बी.ए. करके तुरंत विवाह कर लिया। उसका पति अमित गोयल सेंट्रल बैंक में मैनेजर था। पाँच साल में ही विनीता माया और अजय की माँ बन गई। विनीता इतना अच्छा खाना परोसती की अमित अपने बढ़ते हुए मोटापे की ओर देखे बिना खाये जाता। उसके इस मोटापे से विनीता भी उदासीन था किंतु वह आदर्श माँ और पत्नी बनना चाहती थी। एकबार बारह वर्षीय माया ने माँ से कहा - "तुम हर वक्त घर पर क्यों बैठी रहती हो ? कोई जॉब ब क्यों नहीं करती ? मेरी सब सहेलियों की मम्मी काम करती हैं।"[२४] और इसीतरह एकबार अजय के स्वेटर

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

पहनने के बारे में बात हुई तो अजय ने माँ से कहा " "ओफ्फकोह, तुम कुछ जानती भी हो । रवि की मम्मी डाक्टर है, वे कहती हैं खेलते समय भारी ऊनी कपड़े नहीं पहनने चाहिए।"[२५]

बच्चों की इन बातों से विनीता उदास हो गयी। एक दिन वह अपनी माँ के घर गयी। तो उसे पता चला कि उसके पापा को अस्पताल में एक रिसेप्शनिस्ट की जरूरत है। विनीता ने अपनी पहली शर्त को बदलकर झट से कहा - "माँ आप मुझे रिसेप्शनिस्ट रख लीजिए। सुबह की शिफ्ट के लिए मैं अमित को कैसे भी मना लूँगी प्लीज।"[२६]

उसी शाम विनीता ने खाने की एक - एक चीज अमित की पसंद की बनायी और उसे नौकरी के लिए राजी करा लिया।

आलोचना -
-------

इसप्रकार लेखिका इस कहानी में यह कहना चाहती है कि समय के साथ मनुष्य को अपने विचारों को बदलना पड़ता है। पहले से तय किए हुए रास्ते भी कभी - कभी बदलने पडते हैं । नारी नौकरी करके भी आदर्श माँ और पत्नी बन सकती है। और आज के युग में यह आवश्यक भी हो गया है कि नारी स्वयं अपने पैरों पर खडी हो जाय। आधुनिक युग के बच्चों में भी यह प्रभाव जारी है, वह भी अपनी माँ को कुछ करने की सलाह देते हैं । स्थिति के अनुसार नारी को भी बदलना चाहिए इसमें इसके साथ ही नारी की मानसिकता की भिन्न स्थितियों को चित्रित किया है। कहानी सीधी, सरल और छोटी है किंतु मार्मिक है।

इस कहानी में निम्नलिखित समस्या दिखायी देती है -

[१] नारी के अहं की समस्या।

*****************

## १०. ताशमहल - चित्रा मुद्गल

कहानी का सार -

शोभना ने अपने पहले पति [दिवाकर] के बेटे बच्चू को लेकर दूसरा वि ाह कर लिया है। अर्थात् अपने विवाह के पूर्व प्रेमी [निशीथ] के साथ रहने लगती है। शोभना नौकरी करती है। इन घटनाओं के बीच शोभना का तबादला शिमला हो गया। किंतु वह बच्चों और पति को छोड़कर नहीं जा सकती। और दूसरा कारण यह भी होता है कि शोभना दूसरे बच्चे की माँ बननेवाली है। और इसलिए उसने निदेशक के नाम अपने तबादले के संदर्भ में तीसरा कड़ा विरोध पत्र लिखा और पी. ए. नौटियाल को बुलाकर तत्काल टंकित कर लाने को कहा।

निशीथ के मन में रोनू के होने के बाद बच्चू के प्रति घृणा होने लगी उसके सिरपर यह भूत सवार हो गया था कि शोभना सिर्फ बच्चू से प्यार करती है, रोनू से नहीं। निशीथ के इस व्यवहार की एक दिन हद हो गयी। हुआ यह कि निशीथ ने बीमार अशक्त बच्चू को शक्तिभर उंचे उठाया और निर्दयता-पूर्वक पलंग पर पटक दिया। इसपर शोभना ने निशीथ को बहुत डाँटा तब निशीथ ने कहा - "यह मात्र दिवाकर का अंश ही नहीं। उसकी शक्ल में तुम दिवाकर को ही जी रही हो। दिवाकर तुम्हारे जीवन से निकलकर आज भी नहीं निकल गया। इस घर में अपने और तुम्हारे बीच मैं और नहीं बरदाश्त कर सकता।"[२७] शोभना ने पति के इस कथन पर कहा, "मैं माँ हूँ - - - - - - - - बच्चू और रोनू में अंतर कर सकती हूँ ?" ऐसा नहीं हो सकता कि तुम अपने मन में बैठी आधारहीन शंकाओं को उखाड़ फेंको और बच्चू को उसी रूप में प्यार करो जैसे पहले करते थे ? तुमने तो स्वंय दिवाकर बनना चाहा था उसके लिए पिता बनकर। सत्य इतना भर है कि इस घर में रोनू के लिए दादी है, माँ है - - - - किन्तु बच्चू के लिए सिर्फ उसकी माँ भर है। इस घर में ही क्या संभवत: पूरे संसार में और मैं उससे उसकी माँ छीनने का अपराध अपराध नहीं कर सकती - - - - "[२८]

तब निशीथ ने अंत में उससे कहा, "ये तुम्हारे मन के भ्रम हैं - - - - लेकिन अब भी ये घर घर हो सकता है - एक शर्त पर । बच्चू को होस्टल में डालना होगा।"[29] इतना कहकर निशीथ के चले जाने के बाद शोभना अपने मन में सोचने लगी - जो व्यक्ति [दिवाकर] मेरे जीवन से निकल चुका है, उसे तुम [निशीथ] इस अबोध बच्चे [बच्चु] में खोज रहे हो। यह दिवाकर का अंश जरर है निशीथ, किंतु यह मेरा भी तो अंश है। तुम मुझे क्यों नहीं खोज सके इसमें और इसे क्यों नहीं अपना सके ?[30]

दूसरे दिन सुबह पी. ए. नौटियाल निदेशक के नाम लिखाया गया पत्र टंकित करके ले आया। तब शोभना ने वह पत्र फाड़ दिया और नौटियाल से कहा - "दूसरे पत्र का डिक्टेशन ले लो, अब मैं तबादले पर जाने के लिए तैयार हूँ।"[31] कागज कलम संभालते हुए नौटियाल अचरज से मॅडम की ओर देखने लगा॥

आलोचना -

चित्रा मुद्गलजी ने इस कहानी में नारी की विवशता को चित्रित किया है। शोभना पढ़ी - लिखी है, आर्थिक दृष्टि, परिपूर्ण है किंतु फिर भी उसका पति उसपर कितनी निर्दयता से रोब जमाना चाहता है। नारी को हमेशा पुरुष ने अपने हाथ का खिलौना माना है और जब नारी इसका सामना करना चाहती है तो उसे जिंदगी से बहुत कठिन रास्ते से गुजरना पड़ता है॥ अगर वह नारी कमाती हो तभी वह उसका सामना कर सकती है, जैसे शोभना ने नया कदम उठाया किंतु अगर वह पुरुष पर ही सभी दृष्टि से अवलंबित होती तो उसे पुरुष के कहने के अनुसार ही जीवन को व्यतीत करना पड़ता उसके अत्याचारों को सहते ही जीवन को घसीटना पड़ता है॥

निशीथ सुशिक्षित होकर भी शोभना पर अपने विचारों को थोपना चाहता है। वह अपने पुरुष में स्थित अहं को जीतना चाहता है॥ इसीलिए वह बच्चू को अपने बेटे के रुपमें नहीं देखता॥ बल्कि शोभना जितनी बच्चू से प्यार करती है उतनी ही रोनू से भी। किंतु निशीथ उसके मातृत्व पर ही संदेह करने लगता है॥

और इसीलिए बच्चू को वह होस्टल में रखने की आज्ञा देता है। वह इतना निर्दयी बनता है कि माँ - बेटे के प्यार की जड़ें तोड़ना चाहता है। किंतु शोभना अपने मातृत्व को जीत जाती है वह अपने बेटे के लिए पति को त्याग देना पसंद करती है। इससे चित्राजी ने यही ही साबित किया है कि नारी हमेशा पहले माँ होती है। पुरुष की दृष्टिमें नारी भले ही देह जीवी, विलास और भोग की वस्तु रही हो किन्तु अंन्ततः और शाश्वत रूप में नारी है ने अपने मातृत्व को ही चरम रूप दे दिया है। अपने इस नये रूप को पाकर वह धन्य तो हो जाती है, अन्धकार से घिरे रास्ते में आस्था के साथ चलते रहने का सम्बल भी इस रूप में पाती है, और पुरुष को ठुकराकर सन्तान के पालन में सिंहनी - सी बन जाती हैं।

इस प्रकार चित्राजी ने नारी को पुरुष के अत्याचारों का डटकर सामना करने की भी सीख इस कहानी में दी है। और इसका मुकाबला करने के लिए नारी का शिक्षित और आर्थिक दृष्टि से परिपूर्ण होना आवश्यक है, तभी वह अपनी समस्याओं का सामना कर सकती है। पुरुष में स्थित अहं को तोड़ने के लिए नारी को हमेशा हालात से मजबूर न होकर स्थिती का सामना करना चाहिए। नारी का पुनर्विवाह भी एक बहुत बड़ी समस्या है। अगर वह पुनर्विवाह कर लेती है तब उसकी स्थिति बहुत विचित्र होती है। क्योंकि अगर पहले पति के बच्चे हो और वह पुनर्विवाह के बाद फिर माँ बनती है तब उसके मातृत्व की ओर पति और घर के लोग शंका की दृष्टि से देखते हैं। माँ के प्यार को ही शक की नजरों से देखा जाता है। जब इस प्यार को वह न्यायसंगत रूप देना चाहती है तब भी उसे बहुत पीड़ा सहन करनी पड़ती है। और उस पीड़ा को तोडने के लिए उसे पति और घरतक को त्यागना पड़ता है। उसी पीड़ा को तोड़ने के लिए ही नारी को अपना नया मार्ग चुनना पड़ता है और यह इस कहानी की नायिका ने किया है।

इस कहानी में निम्नलिखित नारी समस्याओं को चित्रित किया गया है -

[१] नारी की पुनर्विवाह की समस्या।

[२] पुनर्विवाह से प्राप्त मातृत्व की समस्या।

[३] पुरुष वर्ग की कठोरता॥

[४] नारी की मानसिक अंतर्द्वंद्वता की समस्या।

************

## ११ आइने की वापसी - नासिरा शर्मा

### कहानी का सार -

नबीला और कमाल मजदूर युनियन के कार्यकर्ता थे और अपना एक "शबनामा" नामक समाचार पत्र भी निकालते थे। व्यवस्था की आलोचना करते हुए जनता को सच बताते और आगे बढ़ने का रास्ता भी दिखाते थे। इसतरह नबीला और कमाल में अत्याधिक नजदीकी बढ़ने के कारण प्यार हो गया और वह प्यार विवाह में बँध गया। किंतु आगेचलकर वक्त ने इसतरह से मोड़ लिया कि दोनों एक दूसरे को छोड़कर अलग रहने लगे। हुआ यह कि एक दिन कमाल ने उबे हुए स्वर में नबीला से कहा - "मैं अब इस आँख मिचौली के खेल से थक चुका हूँ। इसलिए सोचता हूँ कि संघर्ष का यह बोझर दूसरे उठाये उनका भी फर्ज होता है देश की जिम्मेदारी सिर्फ हम पर क्यों ?"[32] उसने देर आगे कहा, "तुम कोई हल्का फुल्का औरतोंवाला काम चुन लो मैं भी किसी ऐसे व्यापार की खोज खबर लेता हूँ जिसमें दौलत आसानी से कमाई जा सके।"[33]

नबीला ने इसपर कमाल से कहा - "किसी और जिंदगी का खयाल मेरे लिए नामुमकिन है।"[34] नबीला पूरी तरह टूट गयी। कमाल के इस रास्ते को नबीला ने ठुकरा दिया। शादी को टूटना था, वह टूटकर रही। कमाल चला गया नयी जिंदगी की तरफ और नबीला रह गयी पुरानी जिंदगी की चौखट पर। कमाल से नबीला का रिश्ता साल दो साल का नहीं बल्कि बचपन से ज्वानी और ज्वानी से अधेड़ उम्र अवस्था की शुरुवात तक का था। इसलिए कमाल के जाने के बाद नबीला को महसूस हुआ कि उसके बदन का आधा हिस्सा काटकर जैसे अलग कर दिया गया हो। पाँच साल का लंबा समय गुजर गया

नबीला अपनी भावनाओं से लड़ते कब की जीत चुकी थी और अब तो व्यवस्था में भी बदलाव आ गया था। उसके संघर्ष का फल उसे मिल गया था। सहकारी बुनियाद पर कई साथियों के साथ नबीला ने एक समाचार एजेंसी खोली जो खुले वातावरण में भी अपने तेवर न बदल सकी और सामाजिक आलोचक बनकर सरकारी व्यवस्था की रूढ़िवादिता पर कटाक्ष करने से बाज न आती। इसलिए एजेंसी की ओर सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा। एक दिन राष्ट्रपिति द्वारा दिये गये भोज में उसकी मुलाकात कमाल से हो गयी। कमाल ने बड़े उद्योगपति की बेटी उजमा के साथ विवाह कर लिया था। अपनी शानशौकत दिखाने कमाल नबीला को अपने घर ले गया। नबीला उसके इस अमीरी को देखकर मन में सोचने लगी। पिछले पाँच वर्ष में वह एक दिन भी कमाल को भूल नहीं सकी। किंतु कामल की खुशियाँ देखकर उसे इस बात का बड़ा अफसोस हुआ।

पाँच - छः वर्ष ऐसे ही बीत गये। तभी एक दिन कमाल नबीला के घर उससे मिलने आ गया। वह अकेला और उदासी से भरा हुआ था। उस उदासी का कारण बताते हुए उसने कहा, "मेरी दिमागी जरूरतों को उजमा नहीं समझ नहीं पाती। मैं अब यह जिंदगी ज्यादा नहीं झेल सकता हूँ - - - - - -[३५] "यह गलतफहमी नहीं है बल्कि मेरी बुनियादी जरूरते मुझे दिवाना बना रही हैं। मुझे सोच, मुझे फिक्र, मुझे ख्याल चाहिये। मैं दिमागी भूख से निढ़ाल हूँ। नबीला मुझे मरने से बचा लो - - - - - मुझे आत्महत्या से बचा लो नबीला - - - - - - - - "[३६] कमाल पूरी तरह टूट चुका था।

मैं - - - - - - ? नबीला पहाड़ से खाई में गिरी। जब पतवार फेंककर उसने इंतजार की तख्ती अपनी जिंदगी पर से हटा दी तो उस समय यह आदमी - - - - - कितना बचपना है इसमें और यह मुझे क्या समझता है। क्या मैं इंसान नहीं हूँ ? मेरी ख्वाहिश और ख्याल की कोई कीमत नहीं है ? मेरी इज्जत और पहचान का कोई महत्व नहीं है। आज बारह वर्ष बाद किस आराम से दूसरी जिंदगी को छोड़ देने का फैसला करके पहली में दाखिल होने का खुद - - — ब - - - - खुद निर्णय ले लिया ?[३७]

नबीला यह सब मनमें सोचने लगी।

और बाद में उसने कामल से कह दिया - "सुनो, कमाल जब मोहब्बत जिंदगी में दाखिल होती है तो उस पर इंसान का कोई वश नहीं होता। मगर जब मोहब्बत जिंदगी से विदा लेने लगती है तो उसे थामकर रखना भी गैरमुमकिन होता है। यही मेरी मजबूरी है, ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ। उम्मीद है तुम मेरी मुश्किल समझोगे। तुम किसी के पति हो। तीन बच्चों के बाप हो। ऐसी हालत में मुम को यहाँ से जाना होगा। मैं अपनी जिम्मेदारी समझती हूँ और तुम्हारी भी उठो कमाल, इस घर में तुम्हारी याद तो रह सकती है पर तुम नहीं।"[३८]

उसके चले जाने के बाद वह सोचने लगी। इंसान इतना बोझिल भी हो सकता है ? आइना [कमाल का प्रेम] जिसमें वह बरसों तक अपने को देखते आयी थी वह आज नहीं बल्कि बर्षे पहले वापस चला गया था और अब जो जहानुमा आइना [युनियन के क्रांतिकारी लोग] उसके सामने थे। उसमें पूरी दुनिया के लोगों को देख रही थी। वही उसके सरोकार थे। वही उसका [उसके साथी] मोहब्बत का आइना थे। वही उसका घर संसार थे।

आलोचना -

इसप्रकार नासिराजी ने नबीला नामक पात्रा के माध्यम से नारी के आत्मसम्मान से भरी, कर्तृत्व उभरी नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व का चित्रण किया है। इसके साथ ही नारी जब अपने विचारों पर अटूट रहती है तब उसे बाह्य और आंतरिक संघर्षों से कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इसका बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है। और कमाल के माध्यम से पुरुष वर्ग की कठोरता और नारी को जब चाहे व्यक्तिगत सम्पत्ति बनाने की अधिकार - भावना को चित्रित किया है। नारी की व्यथा को पुरुष वर्ग मनोरंजन का साधन मानता है। अपनी ही इच्छा के अनुसार उसे बदलना चाहता है किंतु जब वह उसके इस बदलाव को ठुकरा देती है तब वह आराम से दूसरी स्त्री को अपने जीवन में समा लेने को तैय्यार होता है। और इसलिए

कमाल नबीला से झट से रिश्ता तोड़कर उजमा के साथ विवाह करता है। और पुरे १२ वर्षो तक वह अकेली नबीला की ओर एक बार भी मुड़कर नहीं देखता और पुरे बारह वर्ष के बाद वह एक बार फिर आसानी से नबीला की जिंदगी में प्रवेश करना चाहता है॥ किंतु नबीला ने इस प्रस्ताव को ठुकराकर नारी की शक्ति का परिचय दिया है॥ लेखिकाने नारी की इसी त्यागमयी शक्ति का भी परिचय देना चाहती है। नारी शिक्षा और शिक्षा के आधारपर प्राप्त नौकरियों ने आज नारी को एक आत्मविश्वास, आर्थिक सुरक्षा और आर्थिक सक्षमता प्रदान कर उसे यह अनुभव दिया है कि वह किसी भी प्रकार पुरुष से हीन नहीं है॥ और इसलिए वह पुरुष के सामने झुकना नहीं चाहती। उसकी हर इच्छा के अनुसार चलना नहीं चाहती। उसके इस ना चलने से उसे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है किंतु वह टूटती नहीं॥ इसीका चित्रण नबीला के माध्यम से चित्रित किया है॥

इस कहानी में निम्नलिखित समस्यायें दृष्टिगोचर होती हैं -

[१] प्रेम की असफलता की समस्या॥
[२] नारी स्वतंत्रता की समस्या ।
[३] परित्यक्ता नारी की समस्या।
[४] नारी की घुटनशीलता।
[५] कर्तृत्व और पति में उलझी हुई नारी की समस्या ॥

****************

## १२. प्रसंग - उषा प्रियवंदा

कहानी का सार -

ममता स्वंय एक डाक्टर है॥ बचपन में ही माँ के चल बसने के कारण उसकी परवरिश पिता और बुआ ने की है। बड़ी होकर ममता लखनऊ मेडिकल कॉलेज से डाक्टरी पढ़कर विदेश चली गयी थी। जब भी वह छुट्टीपर आती तब बुआ उसके विवाह की बात छेड़ती है लेकिन ममता उसकी बात को काट देती। इसीतरह उम्र बढ़ती गयी ॥ वह विवाह

करना नहीं चाहती थी क्योंकि उसे राघव नामक व्यक्ति से प्यार हो गया था। किंतु राघव दो बच्चों का बाप था। ममता को यह मालूम था कि वह राघव से कभी शादी नहीं करेगी। उसने राघव से वादा किया था कि वह कभी उसके पारिवारिक जीवन की सीमा का अतिक्रमण नहीं करेगी। सप्ताह भर जी तोड़कर काम और बुधवार के मध्यान्ह वह केवल राघव की प्रेमिका बनकर रह जाती थी। लेकिन दुर्भाग्यवश राघव का देहांत हो गया। ममता पूरी तरह टूट चुकी। आगेचलकर बुआ ही ममता के लिए एक रिश्ता लायी जिसका नाम दिवाकर था। दिवाकर के दो बेटियाँ थीं। दिवाकर प्रौढ और मुखमुद्रा से शिष्ट, मितभाषी थे। जब बुआ ने उससे कहा कि - "अच्छी तरह समझ लो, यहीं रहना पड़ेगा - - - - - बहुत समझदारी चाहिए - - - - - दो लड़कियों की शादी करनी पड़ेगी - - - - - कोई खेल तमाशा नहीं है कि नहीं सम्भाला तो टिकट कटाया और चली गयी।"[३९]

तब ममता चुप बैठी रही। जिंदगी में इतना झेला तो यह भी सही की मुद्रा में - क्या होगा पुरुष ही होगा न। इसतरह दिवकार के साथ - साथ वह घिसटती रही। दिवाकर ममता का बहुत खयाल रखते थे। किन्तु ममता उदास रहती थी। इसतरह काट लिया था उसने, उस सबसे जो बरसों से उसकी जिंदगी रही थी - और जोड़ लिया था अपने को एक नितांत अपरिचित दिवाकर और उसकी बेटियों से। वह कई बार सोचती की भाग जायें किन्तु वह जायेगी कहाँ॥ यह विवाह तो उसका स्वयं का निर्णय था। इसप्रकार अंत में वह दिवाकर के साथ ही रहती है, पत्नी और माँ होने का कर्तव्य वह पूरा - पूरा निभाती है। दिवाकर पहली पत्नी और बेटियों॰ माँ के बारे में उदास हो जाता है तब ममता को लगता था कि वह भी शोक के घेरे में शामिल हो गयी है, पर वह शोक किसके लिए है यह उसे स्वंय नहीं मालूम।

आलोचना -

उषा प्रियवंदाजी ने इस कहानी में, पढ़ी - लिखी स्वतंत्र व्यक्तिवादी नारी और प्रकृति [नारीत्व] के बीच का संघर्ष चित्रित किया है। इसमें कहानी की नायिका एक शादीशुदा मर्द के प्यार में फस जाती है और बाद में

मजबूर होकर अनमेल विवाह की भयंकर समस्या में फँस जाती है। परिणामत: आदर्श माँ, प्रेमिका और पत्नी भी नहीं बन सकती। ममता स्थिति से मजबूर है। वह पढ़ी - लिखी होकर भी किसी एक भी मकसद में कामयाब नहीं हो सकती। वह स्वतंत्र विचारों से जीनेवाली लड़की है किंतु बाद में स्थिति में फँसती जाती है, और जीवन की ओर देखने की उसकी दृष्टि ही बदल जाती है। परिणामत: वह हमेशा उदास रहने लगती है। नारी के मानसिक अंतर्द्वंद्व को भी चित्रित करने का प्रयास लेखिका ने किया है। नारी के जीवन में विवाह एक बहुत बड़ी समस्या है। उसके बारे में उचित निर्णय लेने से ही नारी सुखी हो सकती है। नहीं तो बाद में पछताने के अलावा कुछ नहीं बचता और जिंदगी को घसीटना पड़ता है।

इस कहानी में निम्नलिखित समस्यायें दिखायी देती हैं -

[१] प्रेम की समस्या।

[२] अनमेल विवाह की समस्या।

[३] स्वतंत्र व्यक्तिवादी नारी की समस्या।

************

## १३. अपने होने का एहसास - मेहरुन्निसा परवेज

कहानी का सार -

नायिका का पति एक ऊँचे और अमीर घरका लड़का है। नायिका अनपढ़, साधारण और गरीब घरकी लड़की है। उसका पति हमेशा ऊँची उड़ान भरनेवाला बाज पक्षी था और उसके पंजे में फँसी फड़फड़ाती एक चिड़िया मात्र थी वह। वह पत्नी को सिर्फ भोगवस्तु मानता था। वह सुंदर रूपवती स्त्री से शादी करना चाहता था किंतु भाग्य ने उसके साथ उस जैसी मामुली साधारण - सी कन्या को बांध दिया था। जब वह एक बेटे [राजन] की, माँ बनी तब उसे लगा था कि, चलो अब उसका जीवन सार्थक बना। किंतु

उसका पति एक अनपढ़ औरत केी हाथ राजन की परवरिश नहीं करना चाहता था और इसीलिये राजन को उसने हास्टेल भेज दिया। राजन जब आइ.पी. एस. हो गया तो बड़े-बड़े घर की बात आने लगी। पति ने यह निश्चय किया था कि वह अपने बेटे राजन का विवाह बड़े घर में और धूमधाम से कर देगा। पत्नी ने उसके इस निश्चय पर मन - ही - मन सोचा-पर घर सिर्फ दिवारों का नाम नहीं है घंर तो बनता है घरमें रहनेवालों से, बचपन से ही वह अपने घर की तलाश में थी, जहाँ सब एक छत के नीचे माया मोह में बंधे रहते हों - - - - पर तकदीर का खेल देखो --- रामजी ने संसार दिया, शारीर दिया, चाहत जगानेवाला मन दिया, परहने के लिए एक सुरक्षित घर नहीं दिया, जहाँ वह आँख भर सो सकती हो।[४०]

एक दिन राजन की सगाई तय हो गयी॥ राजन की मंगेतर रईस बाप की इकलौती बेटी थी। किंतु राजन की माँ सोचती है कि बहु के साथ पटेगी या नहीं ? और इसीको लेकर वह राजन की सगाई के दिन चिंतित और उदास है। लेकिन राजन का पिता बहुत खुश है। वह पत्नी की ओर बदले की भावना से देख रहा है॥ और अचानक राजन ने एक अनोखी और सीधी - साधी लड़की को लेकर घर में प्रवेश किया। राजन का पिता उसे देखकर चीख उठा - "किसकी आज्ञा से तू इसे यहाँ लाया रे, क्या इसीलिए तुझे मैंने बाहर रखकर इतना पढ़ाया - लिखाया था कि, तू बड़ा होकर बापके के सामने किसी का भी हाथ पकड़कर ले आयेगा ?"[४१]

राजन ने कहा - मैने कोर्ट में इससे शादी की है, यह मेरे साथ पढ़ती थी। बापू जिस उंची पढ़ाई से आप मुझे बड़ा आदमी बनाना चाहते थे, उसी पढ़ाई ने मुझे कम - से कम इतनी समझ तो दी की अच्छा और बुरा पहचान सकूँ। जिस औरत को आप उम्रभर चींटी समझकर पैरोंतले रौंदते रहे वह मेरी आराध्य देवी रही। माँ ही मेरा आदर्श रूप रही और मैंने उसी की तरह एक सीधी - सादी लड़की को अपना जीवन साथी भी चुना है - - - - मैं तो बस माँ से आशीर्वाद लेने आया था। मुझे आपका आशीर्वाद भी नहीं चाहिए॥"[४२]

राजन ने आगे कहा - "माँ, आशीर्वाद दो, मैं तुम्हें लेने आया हूँ, मेरे घरको तुम अपने हाथों सँवारोगी। मै तुम्हें अब यहाँ रहने नहीं दूँगा।" ४३

बेटे ने जैसे सारी उम्र की हार को जीत में बदल दिया था, माटी की धूल को जैसे चंदन बना दिया था। उसने निहाल होकर दोनों बाहों में बेटे और बहू को बांध लिया। रोम - रोम में जैसे शंख बज रहे थे, आँखों में जैसे गंगा उमड़ पडी थी। उसे आज पहली बार अपने होने का जिंदा रहने का एहसास शिद्दत से हुआ।

आलोचना -
-------

प्रख्यात महिला कहानीकार मेहरुन्निसा परवेजजी ने इस कहानी में नारी की परवशता को चित्रित किया है। लेखिका पुराने आदर्शों की दुहाई देना चाहती है। नारी की जिंदगी में पति ही सबकुछ होता है किंतु पति ने अगर उस रिश्ते को ठीक तरह से निभाया नहीं तो वह पूरी तरह टूट जाती है किंतु पति के बाद उसके जीवन का सबसे बड़ा सहारा होता है उसका बेटा और उसी की ओर वह देखकर अपनी टूटी जिंदगी को आशा की किरणों में देखती जाती है। जैसे इस कहानी की नायिका अपने बेटे राजन की आशापर जीवन के सबसे कीमती वर्ष नरक में बिताती है किंतु बुढ़ापे में उसकी व्यथा का अंत हो जाता है। नारी अपनी संतान के पालन पोषण के लिए सदा ही पति, प्रेमी परिवार तथा परम्परा के नीचे पीसती आई है। और राजन की माँ इसीका शिकार है। इसी कारण वह अपनी अतृप्ति और अपनी व्यथा से घुटती रहती है। अपने पति के अत्याचारों को मूक रूपसे सहती रहती है। नारी का अनपढ़ होना बहुत बड़ा शाप है। अनपढ़ और आर्थिक परावलंबनता से ही वह समाज और पति की ओर से शोषित होती है। वह अपने ऊपर होते हुए अत्याचारों को मूक रूपसे सहते रहने के अलावा कुछ कर नहीं सकती। उन अत्याचारों का मुकाबला नहीं कर सकती। स्थिति से मजबूर होकर जीवन को घसीटती रहती है। और पुरुष हमेशा उसका फायदा उठाता है। यही सब कुछ इस कहानी में राजन की माँ के साथ घटित हुआ है। किंतु कहानी के अंत में मातृत्व की जीत दिखायी है। बेटे द्वारा उसकी पीड़ाओं का

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

अंत हो जाता है और तब उसे पहली बार अपने अस्तित्व का पता चलता है, जिंदा रहने का एहसास होता है॥ इसप्रकार भारतीय नारी की सहनशीलता, त्यागमयता का बहुत ही मार्मिक चित्रण इस कहानी में मिलता है। इस कहानी में नारी की निम्नलिखित समस्यायें दिखायी देती हैं -

[१] अनपढ़ नारी की समस्या।

[२] नारी की आर्थिक परावलंबिता की समस्या।

[३] पति के अत्याचारों से पीड़ित नारी की समस्या।

[४] नारी की घुटनशीलता।

[५] पुरुष वर्ग की कठोरता।

*************

## १४. इस्तिंजा का ढेला - डा. माजदा असद

कहानी का सार -

इस कहानी की नायिका मुस्लिम घर की लड़की है। उसके पिता सरकारी स्कूल में मास्टर होने के कारण नायिका आपने परिवार के साथ अनेक स्थानों पर घूम चुकी है। जब पिता रिटायर हो गये तब सभी अपने गाँव वापस आ गये॥ नायिका के बड़े अब्बा के आठ बेटे थे। अपने छठे नंबर के बेटे ममदू से बड़े अब्बा नायिका की शादी करना चाहते थे। बड़े अब्बा के सामने किसी की एक नहीं चलती थी। किंतु नायिका और आगे पढ़ना चाहती थी और इसीलिए उसने आपने भाई के पास जाकर शहर में बी.ए.. में दाखिला ले लिया। जब वह बी. ए. होकर आयी तब फिरसे विवाह की बात चलने लगी। नायिका ममदू से बिल्कुल नफरत करती है, क्योंकि ममदू बहुत ही जिद्दी और शेखी मारनेवाला था। नारी को वह हमेशा घृणा की दृष्टि से देखता है और नायिका पढ़ी - लिखी है इसलिए उससे उल्टी सीधी बातें करता है॥ एक बार ममदू ने कहा "तुम अपने आपको क्या समझती हो ? आजकल तो बी.ए. पास लड़कियाँ इस्तिंजा के ढेले के साथ उठा लो॥"[४४]

नायिका उसके इस कथन पर उसका मुँह देखते रह गयी। वह सोचती है - मैंने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि बी. ए. पास लड़कियों की तुलना इस्तिंजे के ढेले से की जायेगी॥ यह तो सुनती आयी थी कि औरत पाँव की जूती है॥ जब चाहे बदल लो॥ अपने देहात के अनेक पुरुष सड़क की नालियों पर पेशाब करने के बाद पास पड़े हुए मिट्टी के ढेले को पाजामें में डालकर इस्तिंजा करते हुए बाद में ढेलो को फेंकते हुए मेरी आँखो के सामने घूमने लगे - - - - मामा, चाचा, छिद्‌दा, ताय आदि। मेरा सिर चकराने लगा।" [४५] मानो मैं इस्तिंजे के ढेर पर गिरी जा रही हूँ॥ बदले की आग से नायिका ने अपनी जिंदगी की नयी राह ढूँढ़ ली। उसने ममदू से विवाह के लिए साफ इन्कार कर दिया। घर में कुहराम मच गया। सिर्फ माँ ने उसका साथ दिया क्योंकि वह अपनी बड़ी नेक और होशियार बेटी को ममदू जैसे घटिया आदमी से बाँधना नहीं चाहती थी। नायिका ने आगे एम. ए. किया और उसके बाद पी.एच्. डी. के लिए रजिस्ट्रेशन करा दिया। और संयोग से एक वर्ष के भीतर दिल्ली में एक काम चलाऊ नौकरी मिल गयी। इधर ममदू का विवाह छोटे भाई की साल के साथ हुआ। वह अनपढ़ और अंगूठा छाप थी। यह सब कहानी नायिका को तीस वर्ष के बाद पुन: याद आ गयी है क्योंकि आज ममदू अपनी बीवी जमीला को अस्पताल दिखाने के लिए अपने चार बच्चों के साथ देहल्ली नायिका के पास आ गये हैं॥ नायिका मन में सोच रही है कि शाम को अस्पताल से लौटने पर भाई ममदू से पूछूं कि - "कितनी बी.ए. पास इस्तिंजे के ढेले के साथ उठायी - - - - - कोई गिनती है क्या ?" [४६]

आलोचना -

डा. साजदा असद हिंदी की प्रख्यात महिला कहानीकार हैं। उन्हेंा ने इस कहानी में पुरुष का अहं और उसकी नारी की ओर देखने की हीन दृष्टि का चित्रण किया है। नारी का पढ़ना भी एक बहुत बड़ा गुनाह है ऐसा पुरुष को लगता है। क्योंकि अगर वह पढ़ेगी तो अपने पर होते हुए अत्याचारों का सामना करेगी॥ इसीलिए इस कहानी की नायिका ममद से विवाह

के लिए साफ इन्कार करती है और अपना भविष्य अपने आप बदलती है। वह पढ़ी - लिखी है इसीलिए भाई ममदू उसकी तुलना इस्तिंजे के ढ़ेले से से करता है जब नारी को किसी भी कारणवश दबोया जाता है। तो वह विद्रोही रूप धारण करती है। यही इस कहानी में नायिकाने ने किया है।

लेखिका यह कहना चाहती है कि ममदू जैसे अहं और हिनभावना से ग्रस्त पुरुष वर्ग का नारी को डटकर सामना करना चाहिए। और नारी किसी भी मात्रा में पुरुष से कम नहीं है, हीन नहीं है यह पुरुष को, समाज को दिखाना चाहिए। और इसके लिए नारी का शिक्षित और आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होना आवश्यक है। तभी वह अपनी समस्याओं का हल ढूँढ़ सकती है। और यही इस कथा नायिकाँने किया है। ममदू के अहं के कारण ही उसे एक अनपढ़ स्त्री से विवाह करना पड़ता है। पुरुष हमेशा यही चाहता है कि नारी हमेशा सभी दृष्टि से उसीपर अवलंबित रहे। किंतु आज की नारी को यह कदापि कबूल नहीं। वह हर क्षेत्र में उसके साथ कदम बढ़ाना चाहती है अपने अस्तित्व को समाज को दिखाना चाहती है। वह स्थिति से मुकाबला करती है, कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति आज की नारी में निर्माण हुई है।

इसप्रकार इस कहानी में निम्नलिखित नारी समस्याएँ दिखायी देती हैं -

[१] नारी की शिक्षित होने की समस्या।

[२] नारी की स्वतंत्रता की समस्या।

[३] नारी की ओर देखने की समाज की हीन - दृष्टि।

[४] पुरुष का अहं।

********

## १५. तान्सेन् - चंपा लिमये

कहानी का सार -

लेखिका भारत से ब्रह्मदेश गयी हुई है और रंगून शहर में श्री. दीनानाथ और उनकी पत्नी सिस्टर सुखवंती के यहाँ वह रह गयी है। मिस्टर दीनानाथजी के घर में तान्सें नामक एक अत्यंत बदसूरत औरत काम करती थी। नायिका उसे देखकर मन ही मन सोचती है - कितना बड़ा कद है इस औरतका। स्त्रीकी मृदुता, कोमलता उसके किसी भी अंग में नहीं। उसकी बड़ी - बड़ी हथेलियाँ, मोटी - मोटी उंगलियाँ, चौड़े - चौड़े पैर, टेढ़ी - मेढी नाक, बड़े - बड़े होठ, विशाल पेट विधाता ने सारा शरीर बनाया था मर्दाना और गलती से उसे डाल दिया था महिला के जन्म में। तान्सें जिस घर में काम करती है उसीके घर में उसका भाई [ठुंजी] काम करता है। तान्सें का भाई अंत्यत सुंदर था। लेखिका उन भाई - बहनों की भिन्नता देखकर बहुत चकित हो गयी। ठुंजी तान्सें को बहुत मारता, पीटता है। उससे पैसे लेकर फिल्म और जुआ खेलता है। तान्सें हर समय काम में लगी रहती थी। और हमेशा उदास भी रहती थी। अपनी उदासी को वह काम में भूलना चाहती थी। एक दिन ठुंजी की शादी तय हो गयी। वह शादी के लिए आपने घर चला गया। किन्तु तान्सें अपने भाई की शादी में नहीं गयी। जब उससे उसका कारण पूछा तो उसने खिन्नतापूर्वक कहा, "नहीं, नहीं मेमसाब बिल्कुल नहीं। मैं हर्गीज नहीं जाउंगी। वहाँ सब लोग मेरी हँसी उड़ायेंगें। हरक कोई ठुंजी की सुंदरता कोमलता की सराहना करेगा। और मेरी कुरूपता पर मुझे उलाहना देगा। मेरी उम्र है उससे दुगुनी। मेरी शादी तो होती नहीं। - - - - - - पहले पहल झूठी आशा थी। मैं अपने देह को खूब सजाती थी, संवारती थी। लेकिन भगवान ने एक न सुनी। कितने सालों से मैं यह घुटन सह रही हूँ। लोगों के तीखे कटाक्षों से मेरे माँ - बाप भी हैरान हैं, आखिर मैंने सोचा क्या फायदा है घरक जाकर ? यही काम - काज में बगीचे में अपना मन क्यों न लगाऊँ। कम से कम मवेशी तो मेरे प्यार को समझते हैं।"[४७]

ठुंजी अपनी सुदंर पत्नी को लेकर मालिक के घर आ गया। अचानक एक दिन तान्सैं बिना कुछ कहे घर से गायब हो गयी॥ एक दिन घर के सभी लोग घूमने गये। तभी एक तालाब के किनारे एक बद्दे काले पुरुष के साथ तान्सैं बैठी थी। वह भयानक पुरुष उसके शरीर से खेल रहा था॥ किंन्तु तान्सैं का चेहरा एक अजीब संतोष से, तृप्ति के भाव से परिपूर्ण था। तान्सैं ने जब इन लोगों को देखा तो वह घबराकर भाग गयी। कुछ दिनों बाद लेखिका का भारत लौटने का समय आ गया॥ एक दिन दोपहर को तान्सैं चीखती हुयी मालिक के घर आ गयी। उसके बाल बिखरे हुये थे। चेहरा पीला पड़ गया था और वह गर्भवती था। सारे होश हवास खो बैठी थी। क्रूर नियती के हाथ का खिलौना बन गयी थी। उसके यौवन का पूरा भोग लेकर हर पुरुष में उसे दूर फैंक दिया था॥ उसने जहर पी लिया था। डाक्टर को तुरंत बुलाया गया। लेकिन तबतक तान्सैं बहुत सिरियस हो गयी थी। उसकी आँखो में बिध्द पंछी का भाव था। जीवन भर की उपेक्षा उसके लिए असहय हो गयी थी। इसतरह तान्सैं ने अपने शील की बलि चढ़ाकर जो सुख पाया था वह क्षणभंगुर साबित हुआ। आपने स्त्रीत्व के सफल होने का एहसास उसे हुआ। परंतु उसके लिए उसे भारी मोल चुकाना पड़ा था। इतने दिनों की वह उपेक्षित, आज दुनिया की नजरों मे वह हो गयी थी पतिता।

आलोचना :-

चंपा लिमयेजी ने इस कहानी में नारी की विवशता, व्यथा को चित्रित किया है॥ तान्सै एक गरीब, कुरुप, अधेड उम्र की नारी है। नारी जब घर और समाज से उपेक्षित हो जाती है तब वह अपना विद्रोही रुप दिखाती है। तान्सैं का भी यही हुआ। वह समाज और घर से बदला लेना चाहती है उसके लिए उसे अपनी शील की बलि चढ़ाकर जान तक देनी पड़ती है। किंतु उसकी भी उसे परवाह नहीं होती। वह सच्ची, नेक नौकरानी होकर भी अपने आपसे भी बदला लेतीरहैी. घर के लोग ही उसकी उलाहना करते हैं इसका उसे बहुत दु:ख है। समाज की उपेक्षित दृष्टि का बदला लेने के लिए उसने शील की बलि चढ़ाकर अपने नारीत्व को सिध्द किया। अनेक पुरुषों ने उसे वासना का शिकार

बनाया किंतु किसी ने भी उसे हमेशा के लिए स्वीकार नहीं किया। नारी की विवशता एवं दुर्बलता से लाभ उठाकर अपनी वासना - तृप्ति करा लेने के अवसरों को पुरुष वर्ग ने कभी नहीं छोड़ा। और इसीका तान्सें शिकार हो गयी।

इसप्रकार नारी को दुर्बल, अशिक्षित, या अनपढ़ और कुरूप होने के कारण बहुत ही हीन समझा जाता है। और जब वह उसका मुकाबला नही कर सकती तो जिंदगी में उसे गलत रास्ते से कदम उठाना पड़ता है परिणामत: समाज उसकी ओर फिर से घृणा की दृष्टि से देखता है।और इससे मुक्ति पाने के लिए उसके पास आत्महत्या के सिवा दूसरा रास्ता नहीं होता। इन्ही नारी - समस्याओं को तान्सें के माध्यम से लेखिका ने चित्रित किया है।

इस कहानी में निम्नलिखित समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं -

[१] अनपढ़, कुरूप नारी की समस्या।
[२] नारी - विवाह की समस्या।
[३] घर और समाज से उपेक्षित नारी की समस्या।
[४] पतिता की समस्या।
[५] नारी की विवशता ।

**********************

## १६. उन्मुक्ति - डा. पूर्णिमा केडिया

### कहानी का सार -

सुधीर और कविता ने प्रेमविवाह किया है। किंतु विवाह के बाद सुधीर कविता पर रोब जमाने लगता है। वह अपने को कविता की हर इच्छा, क्रिया और भावना का मालिक समझता है। एक बार ऐसे ही बस्ती के किसी काम की रिपोर्ट तैयार करने के लिए कविता सुधीर की स्कूटर ले गयी। ब्रेक फेल होने के कारण स्कूटर खराब हो गयी। जब सुधीर को इस बात का पता चला तो उसे इतना गुस्सा आ गया कि एक मामूली स्कूटर

के कारण वह कविता से उल्टी सीधी बातें करने लगा। कविता सोचने लगी की यही प्रेम का संसार है ? क्या इसी के लिए वह जीती है और जीती रहेगी जिंदगी भर ? - - - - - - नहीं अब और नहीं। सुधीर के चले जाने के बाद कविता सीधी लेखिका भवानीदास के घर चली गयी। और वहाँ से अपनी भाभी के घर। भाभी को उसने सबकुछ बता दिया। उसने कहा कि वह सुधीर से अलग होना चाहती है। भाभी ने कहा - "औरत को इन्सान समझता ही कौन है ? वह तो बस रस्सी से बंधी गाय होती है। तुम यह क्यों भूलती हो कि तुम औरत हो। "नारी" और "अहम्" यह दोनों साथ - साथ नहीं रह सकते।"[४८]

भाभी के इन विचारों को सुनकर कविता चुप हो गयी। आगे चलकर भाभी ने यह बताया कि कविता की सहेली वसुधा मायके आयी है और वह कविता से मिलना है चाहती है। कविता अपनी बचपन की प्रिय सहेली वसुधा से मिलने गयी। बातों ही बातों में दोनों ने अपने पतियों की बात छेड़ी। जो समस्या कविता की थी, वही वसुधा की भी थी। औरतों की समस्याओं का कारण ढूँढते हुए कविता ने वसुधा से कहा - "ये जो पुरुष प्रधानता के संस्कार होते हैं न, ये शायद पुरुषों के खून में ही मिले रहतेव हैं। इसीलिए वे जाने या अनजाने स्त्री को नीची जमीन पर खड़ा देखते हैं और अपने को हमेशा ऊँचे टीले पर खड़ा महसूस करते हैं। लेकिन यह अकड़ भी तो मर्दों को नारियों ने सिखायी है। माँ ही तो अपने बेटे को जन्मघुंटी में घोलकर पिलाती है कि तू लड़का है, तू नारी से महान है तेरे बिना दुनिया नहीं, वंश नहीं, जीवन नहीं। - - - - - - - - - - पुरुष को बदलने से पहले नारी को अपने आपको बदलना होगा। उसे समझाना होगा कि वह किसी मायने में भी पुरुष से कम नहीं।"[४९]

उसके बाद जब वसुधा ने पूछा - "तुम तलाक लोगी तो तुम्हारा बेटा तुम्हारे पास रहेगा या अपने पापा के पास।"[५०]

तब कविता ने कहा, "जानती हो कल मैं लेखिका श्रीमती भवानीदास से मिलने गयी थी। तलाक लेकर भी तो वह खुश नहीं है - - - - - भाभी शायद ठीक ही कहती है कि अपनी संतान के कल्याण के लिए हमें पति के साथ ही रहना चाहिए - पति को बदलने का प्रयत्न भी करना होगा, हालाँकि यह कठिन कार्य है - - - - - लेकिन माँ, पुत्र को तो इंसान, नारी को भी मानव समझनेवाला सच्चा इंसान बना सकती है।"५१

इसप्रकार दोनों सहेलियों में बातचीत हुई। इसके बाद कविता अपनी भाभी के घर बची। अपनी भाभी के घर गयी। सुधीर उसे लेने आया और वे दोनों अपने घर गये॥ दूसरे दिन पंद्रह अगस्त था॥ दूसरे दिन तड़के उठकर ही आजादी के उल्लास में कविता ने घर साफ किया। राष्ट्रीय वस्त्र निकाले, जो कुछ वर्ष पूर्व ही आजादी की वर्षगांठ के दिन उन्होंने राष्ट्रीय झंडे के रंग के कपड़े खरीदे थे॥ सुधीर की केसरियाँ कमीज ज्यों - - की - त्यों थी। उसने पहन ली। कविता अपनी हरी साडी पहनने लगी तो देखा उसमें जगह - जगह धब्बे पड़ गये है॥ रंग फीका पड़ गया है। कहीं कहीं पीलापन झांकने लगा है, उसने सोचा क्या आजादी केवल तिरंगे के एक रंग को मिली है, दूसरा रंग नारी, अभी भी बदरंग है॥ वह कब आबाद होगी - - - - - कब ? - - - - ५२

आलोचना -
-------

डा. पूर्णिमा केडिया ने इस कहानी में नारी की आजादी के बारे में प्रश्न उठाया है। नारी पूर्णत: स्वतंत्र नहीं है। हर वर्ग की नारी अभी भी पुरूष के इच्छाओं की दासी है। जो समस्या कविता की है वही वसुधा की है और वही लेखिका भवानीदास की जो यें नारियाँ पढ़ी - लिखी होकर भी पति की हर इच्छा के आधीन हैं। इससे बाहर निकलने का लेखिका ने कुछ मात्रा तक हल बताया है। वह कहती है कि पुरूष को बदलने से पहले नारी को अपने आपको बदलना होगा। माँ ही बचपन से अपने बेटे को बेटी से हर बात को बड़ा मानती है। और यही अपनी ही समस्या का वह मूल कारण बनती है । उसे इसतरह के बदलाव

से बदलना होगा॥ माँ ही पुत्र को नारी को भी मानव समझनेवाला सच्चा इन्सान बना सकती है॥

इस कहानी में तिरंगे झंडे को नारी की आजादी का प्रतीक माना है। लेखिका कहती है कि आजादी केवल तिरंगे के एक रंग को [पुरूष को] मिली है, और दूसरा रंग [नारी] अभी भी बदरंग है॥ मतलब वह अभी भी मुक्त नहीं है। वह कब आजाद होगी ?----कब यही सवाल अंतमें लेखिका, पाठकों से पूछती है।

"उन्मुक्ति"सामाजिक कहानी है। इसमें यह बताया है कि नारी को पुरूष से अलग होकर ही स्वतंत्रता प्राप्त होती है यह बात झूट है। उसके साथ रहकर ही वह पुरूष के विचारों को बदल सकती है। अपनी स्वतंत्रता की समस्याओं को उसके साथ रहकर भी दूर कर सकती है॥ केवल तलाक लेकर वह पुरूष से स्वतंत्र नहीं हो सकती। क्योंकि वह तलाक लेकर भी मानसिक दृष्टि से स्वतंत्र नहीं होती बल्कि वह घुटती रहती है। यही समस्या लेखिका श्रीमती भवानीदास की है। इसलिए कविता अपने पति से तलाक लेने के बदले उसके साथ रहने लगती है। वह पति को बदलना चाहती है। पुत्र को नारी को मानव समझनेवाला इन्सान बनाना चाहती है॥

इस प्रकार नारी - जीवन की यथार्थ समस्याओं का चित्रण किया है। नारी स्वतंत्रता उसकी सीमाएँ आदि का चित्रण डा. पूर्णिमाजी ने किया है। इस कहानी में निम्नलिखित समस्या यें दिखायी देती हैं -

[१] पढ़ी - लिखी नारी की समस्या।
[२] नारी - स्वतंत्रता की समस्या।
[३] स्वतंत्रता की सीमाएँ॥
[४] पुरूष वर्ग की अहं वृत्ति।
[५] नारी की तलाक की समस्या।

***********************************

## १७. युक्ति - राजेंद्र दानी

### कहानी का सार -

जब जया चौदह पंद्रह साल की हो गयी तब माँ - बाप को उसके विवाह की चिंता होने लगी। जया दिन-रात घर के कामकाज में व्यस्त रहती थी। जया के पिता एक गरीब आदमी हैं। अपने माँ - बाप की चिंता का कारण वह स्वयं है, जया को इसका बहुत दुख है। वह अंदर ही अंदर कुढ़ती रहती है। वह अपने आपको घरमें एक बोझ महसूस करती है। ठीक इसीतरह जागी रात की एक सुबह दिल्ली से गोविंद चाचा आ गये। तो अंदर चल रहा बहुत कुछ शांत हो गया। गोविंद चाचा बहुत वर्षों के बाद गाँव लौटे थे। उन्होंने अपनी मर्जीसे शादी की थी और दिल्ली में ही घर लिया था। उनकी पत्नी नौकरी करती थी। उन्हें अंकित और श्वेता। नामक दो बच्चे थे। दस - पंद्रह दिन जया के चाचा - चाची गाँव में रहे और उसके बाद दिल्ली जाने के अगले दिन उन्होंने जया को अपने साथ ले जाने का फैसला सुनाया। जया ने इस फैसले पर यह महसूस किया कि माँता - पिता से बिछुड़ने के दुख से ज्यादा वह खुश थी कि वह उनकी चिंताओं को दूर करने जा रही है।

दिल्ली आते ही चाचा ने एक अच्छे स्कूल में जया को दाखिल करा दिया था। अपने घर में जो अनुशासन और दक्षता जया ने पायी थी। उसकी वजह से ही वह चाचा के घर में अच्छीतरह जम गयी। सुबह वह स्कूल जाती थी और ग्यारह बजने के बाद दिनभर घर का काम और अंकित, श्वेता की परवरिश। उसकी इस ईमानदारी से ही चाचा - चाची अब श्वेता और अंकित की ओर से निश्चिंत हो गये थे। इसतरह कई साल गुजर गये। अंकित अब दस साल का हो गया था और श्वेता सात। जया का कॉलेज में यह आखिरी साल था। एक दिन गाँव से अचानक जया के माँ - बाप उसके लिए एक अच्छा सा रिश्ता लेकर आये। और उन्होंने रात को खाते समय सब के सामने यह बात कह डाली। तभी चाची ने चाचा को कुछ इशारा किया। फिर अचानक असहज खुशी दिखाते हुए

चाचा ने जया के पिताजी से कहा, "जया जैसी आपकी बेटी है, वैसे ही मेरी भी है। निश्चित रूप से ऐसे प्रस्ताव मुश्किल से मिलते है॥ पर भईया, मैं इतनी जल्दी अपनी राय दे नहीं सकता। मेरा इतना अधिकार तो है कि आप सोचने के लिए मुझे एक रात का वक्त देंगे।" [५३]

आधी रात को सब गहरी नींद में सोये थे। तब चाची ने चाचा से कहा, "क्या तुम भू ल गये कि जया को हम लोग यहाँ क्यों ले आये थे ? अंकित और श्वेता की परवरिश के लिए जया को यहाँ लाये हैं॥ इसके लिए इतनी लंबी भूमिका बनायी थी हम लोगोंने॥ इसलिए उसपर किए हुए खर्च की भी परवाह नहीं की। अगर उसकी शादी हो गयी तो क्या होगा ? अंकित अब बड़ा हो गया है लेकिन स्वेता तो अभी छोटी ही है ? मुझे तो नौकरी और घर का काम दोनों मुश्किल होगा - - - - - और सुनो, भावुकता में कहीं उसकी शादी के लिए पैसे नहीं निकाल देना। मैं तो कहती हूँ वे लोग अपने एहसानों से इतना दब गये हैं कि कुछ नहीं कहेंगे, तुम शादी की बात दो तीन साल के लिए ट टाल दो, कैसे भी।" [५४]

गोविंद चाचा ने दूसरे दिन पिताजी से खूब सोच - समझकर अपनी बात यूँ कहीं - जया अभी कतई बडीं नहीं हुई है॥ इतनी बड़ी तो नहीं कि तत्काल शादी कर दी जाये। मैं उसे अपने पैरों पर खड़ा करना चाहता हूँ। - - - - - - अगर वह उसे आगे पढ़ना चाहती है तो उसे पढ़ने दिया जाय॥ मैं जया के लिए अच्छा से अच्छा लड़का ढूँढ सकूँगा। मैं किसी तरह की कसर नहीं रखूँगा। आप रिटायर हो जायेंगे तो क्या है ? मैं तो हूँ, आप बिल्कुल फिक्र न करें और फिलहाल शादी को टाल ही दो।" [५५]

चाचा के इस कथन पर पिताजी की आँखे उनके लिए स्नेहिल आसुंओं से डबडबा गयीं। उन्हें चाचा पर पूरा भरोसा था। उन्होंने

खुशी से चाचा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा - "गोविंद फिर तो भई, अब तुम्हारी जिम्मेदारी पर है जया।" ५६

आेट में खड़ी जया सबकुछ सुन चुकी थी। वह अपने प्रति गोविंद चाचा के अथाह प्यार और चिंता को देखकर खुशी से भर गयी थी। फिर उसके हाथ चाचा के घर रख - रखाव के लिए पहले से ज्यादा आत्मीयता और प्यार से चलने लगे थे।

आलोचना -

इस कहानी में राजेंद्रजी ने नारी स्वतंत्रता को चित्रित किया ही है साथ ही साथ शहरी लोगोंकी स्वार्थी प्रवृत्तिका भी चित्रण किया है। आर्थिक दुर्बलता के कारण ` किसतरह अपने लोगों के पास गुलाम बनकर रहना पड़ता है इसका मार्मिक चित्रण किया है। जया आर्थिक दुर्बलता के कारण ही अपने माँ - बाप को छोड़कर चाचा के पास आती है।। और चाची आपने स्वार्थ के लिए ही उसकी परवरिश करते है।। किंतु जया अपने चाचा के स्वार्थी, प्यार को पहचान नहीं पाती और अंधे प्यार में फँसती जाती है। वह पढ़ी - लिखी होकर भी शहरी लोगों के कृत्रिम प्यार को पहचान नहीं पाती। इसप्रकार लेखक यह बताना चाहता है कि शहरी लोग किसप्रकार आपने स्वार्थ के लिए गाँव के भोले लोगों के स्वभाव का बदला लेते हैं।। आर्थिक दुर्बलता के कारण ही माँ - बाप को भी अपनी संतानें एक बोझ लगती हैं और इसीलिए वे इस बोझ को किसी - न - किसी रूप में जल्द से जल्द कम करना चाहते हैं, यही मजबूरी जया कि मातः-पिता की है। और बच्चे भी इसी कारण घर से दूर भागना चाहते हैं। वह घर में एक बोझ बनकर नहीं रहना चाहते। उन्हें मजबूत सहारे की सहारे की जरूरत होती है और यह सहारा अगर उन्हें घरमें नहीं मिल पाता तो वे उस सहारे को ढूँढ़ने के लिए अपने आपको सुरक्षित पाने के लिए घर से दूर भागना चाहते हैं। और यही जया के साथ हुआ है अर्थात् वह अपनी माँ - बाप की चिंताओं को दूर करने के लिए घर से भागना चाहती है।

इसप्रकार इस कहानीमें निम्नलिखित समस्यायें दिखायी देती हैं -

[१] नारी की आर्थिक दुर्बलता की समस्या।

[२] नारी की विवशता।

//////////////////////////////////////////////////////

## संदर्भ - सूची


| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १. | बलराम | - आवागमन | - [फरवरी | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ४५ |
| २. | हरिदत्त भट्ट शैलेश | - शिखर और शिखर | - [फरवरी | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ५८ |
| ३. | प्रेम जनमेजय | - सुंदर पड़ोस | -[अप्रैल | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. २९ |
| ४. | सत्येनकुमार | - जुगनू | - [जून | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ६३ |
| ५. | वही | - -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ६४ |
| ६. | वही | - -"- | - -"- | -"- | -"- | पृ. ६४ |
| ७. | वही | - -"- | - -"- | -"- | -"- | पृ. ६४ |
| ८. | वही | - -"- | - -"- | -"- | -"- | पृ. ६५ |
| ९. | वही | - -"- | - -"- | -"- | -"- | पृ. ६५ |
| १०. | कर्तार सिंह दुग्गल | - अब चिठ्ठी नहीं आयेगी | -[जुलाई | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ४२ |
| ११. | वही | - -"- | - -"- | -"- | -"- | पृ. ४२ |
| १२. | वही | - -"- | -"-" | -"- | -"- | पृ. ४२ |
| १३. | वही | - -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ४३ |
| १४. | वही | - -"- | - -"- | -"- | -"- | पृ. ४५ |
| १५. | रमाकांत | " वह लड़की | -[जुलाई | - सारिका | १९८९ ] | पृ. ४६ |
| १६. | वही | - -"- | -"-" | -"- | -"- | पृ. ४८ |
| १७. | वही | - -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ४८ |
| १८. | वही | - -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ४८ |
| १९. | जगवीर सिंह वर्मा | - ट्रैक्टर का पहाड़- | -[सितंबर | - सारिका | १९८९ ] | पृ. ४१ |
| २०. | वही | - -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ४१ |
| २१. | निर्मला अग्रवाल | - प्राचीन और तीन चेहरे | -[सितबंर { | सारिका - | १९८९ ] | पृ. ८० |
| २२. | वही | - -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ८० |
| २३. | वही | - -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ८१ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| २४. मृदुला गर्ग | - चक्करघिन्नी | - [ अक्तूबर | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ३४ |
| २५. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | -"- |
| २६. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | -"- |
| २७. चित्रा मुद्गल | - ताशमहल | - [अक्तूबर | " सारिका | - १९८९ ] | पृ. ५४ |
| २८. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | -"- |
| २९. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | -"- |
| ३०. वही | - -"- | - -"- | -"- | -"- | -"- |
| ३१. वही | - -"- | -"- | -"- | -"- | -"- |
| ३२. नासिरा शर्मा | - आईने की वापसी | - [] अक्तूबर | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ७९ |
| ३३. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | पृ. ८० |
| ३४. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | पृ. ८० |
| ३५. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | पृ. ८४ |
| ३६. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | पृ. ८४ |
| ३७. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - -"- | पृ. ८४ |
| ३८. वही | - -"- | - -"- | - -"- | - "-"- | पृ. ८४ |
| ३९. उषा प्रियंवदा | - प्रसंग | -[नवंबर | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ३६ |
| ४०. मेहरुन्निसा परवेज | : अपने होने का एहसास | "[नवंबर | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ४७ |
| ४१. वही | ="- | =-"- | -"- | - -"- | पृ. ४८ |
| ४२. वही | - -"- | --"- | - -"- | - -"- | पृ. ४८ |
| ४३. वही | - -"- | --"- | - -"- | - -"- | पृ. ४८ |
| ४४. डग्माजदा असद | - इस्तिंजा का ढेला | -[नवंबर | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ६७ |
| ४५. वही | - -"- | -"-" | -"- | - -"- | ]पृ. ६७ |
| ४६. वही | - "- | -"- | -"- | -"- | ]पृ. ७० |
| ४७. चंपा लिमये | - तानसेन | -[नवंबर | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ७३-७४ |
| ४८. डा. पूर्णिमा केडिया | -उन्मुक्ति | -[नवंबर | - सारिका | - १९८९ ] | पृ. ७६- |
| ४९. वही | - -"- | =-"- | -"- | -"- | पृ. ७७ |
| ५०. वही | --"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ७७ |
| ५१. वही | -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ७७ |
| ५२ वही | -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ७७ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५३. | राजेंद्र दानी - | युक्ति | - [दिसबंर - | [सारिका - | १९८९ ] | पृ. ८३ |
| ५४. | -"- | -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ८३ |
| ५[illegible] | -"- | -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ८३ |
| ५६. | -"- | -"- | -"- | -"- | -"- | पृ. ८३ |

=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=

*********